केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 27

जनवरी – मार्च 2021

केनरा बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Canara Bank
(A Government of India Undertaking)
Together we can

सिंडिकेट Syndicate

दिनांक 08-03-2021 को केनरा बैंक के राजभाषा अधिकारियों के 38वें अखिल भारतीय सम्मेलन के दौरान राजभाषा अधिकारियों को संबोधित करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर

दिनांक 08-03-2021 को बैंक की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 26वें अंक का विमोचन करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर के साथ कार्यपालक निदेशक श्री देवाशीष मुखर्जी एवं मानव संसाधन विभाग के कार्यपालकगण

केनरा बैंक Canara Bank
(A Government of India Undertaking)
Together We Can

श्री एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक
एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

श्री एल.वी.आर. प्रसाद
मुख्य महा प्रबंधक

श्री शंकर एस.
महा प्रबंधक

श्री एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

संपादन सहयोग

श्री एन.एस. ओमप्रकाश
श्री ओमप्रकाश साह
श्री बिबिन वर्गीस
श्री अजय कुमार मिश्र
श्री रवि प्रकाश सुमन
श्री डी. बालाकृष्ण
श्रीमती शिवानी तिवारी
श्रीमती कीर्ति पी.सी.
श्रीमती खुशबू कुमारी गुप्ता
श्री संजय गौतम
श्रीमती आर.वी. रेखा

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

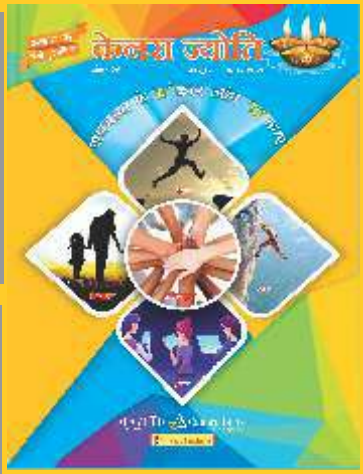

पृष्ठ संख्या | विषय सूची

पृष्ठ संख्या	विषय सूची
2	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश
3	मुख्य महा प्रबंधक का संदेश
4	मुख्य संपादक का संदेश
5	कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर): राष्ट्रीयकृत बैंकों का योगदान
7	केनरा बैंक अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी- 2021
8	महिला स्वयं सहायता समूह : स्वयं सहायता से राष्ट्र निर्माण की ओर
11	संबंधों की महक
13	संकेत
14	'मां की ममता'
15	उदयपुर की अविस्मरणीय यात्रा
18	वैश्विक परिवर्तन में विज्ञान की भूमिका
20	व्यक्तित्व विकास
25	छत्तीसगढ़ के खजुराहो : भोरमदेव की यात्रा
27	केनरा बैंक राजभाषा अधिकारियों का 38वां अखिल भारतीय सम्मेलन
29	क्योंकि जीवन चलती का नाम है
30	दूसरी माँ
33	ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता : श्रृंखला
35	भारतीय बैंकिंग और फिनटेक पारिस्थितिकी तंत्र
38	भाषा का लालित्य
39	मेरी समझ
40	एक संस्मरणीय यात्रा - केरल (देवभूमि)
42	भारत को आत्मनिर्भर बनाने में : स्वभाषा का महत्व
45	राजभाषा हिंदी की स्थिति और संचार के साधन
48	लीला हिंदी प्रवाह

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

'केनराज्योति' का 27वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे हर्षानुभूति हो रही है। कोविड–19 वैश्विक महामारी का दूसरा दौर प्रारम्भ हो गया है। केनरा बैंक परिवार के सभी सदस्यों से अनुरोध करता हूँ कि अपना और अपने परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी समर्पित भाव से देश की आर्थिक प्रगति में योगदान दें।

विगत वर्षों में केन्द्र सरकार ने प्रत्येक नागरिक को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़कर सरकारी योजनाओं का लाभ डिजिटल माध्यम से आमजन तक पहुंचाने का प्रयास किया। आज हम समावेशी बैंकिंग के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के सपनों को साकार करने में योगदान दे रहे हैं। साथ ही, केंद्र सरकार और राज्य सरकार की योजनाओं को लागू करने में अग्रणी बैंक की भूमिका निभा रहे हैं। आकर्षक ब्याज दर एवं शीघ्र एवं परेशानी मुक्त आवास ऋण, वाहन ऋण, शिक्षा ऋण, एमएसएमई ऋण, कृषि ऋण, केनरा स्वर्ण ऋण, डिजिटल बैंकिंग, डोर स्टेप बैंकिंग इत्यादि को प्रमुखता से आम लोगों को उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। डिजिटल बैंकिंग को प्रोत्साहित करते हुए इसे शत–प्रतिशत अपनाने के लिए आज हम पूर्ण रूप से कृतसंकल्पित हैं। साथ ही, हमें आस्ति की गुणवत्ता में सुधार लाने के साथ–साथ कम लागत वाली जमा को बढ़ाने पर भी ज़ोर देने की आवश्यकता है।

प्रतिस्पर्धा का सामना करने व बैंक की छवि को बेहतरीन बनाने के लिए, बैंकों के लिए यह अपरिहार्य हो गया है कि ग्राहक सेवाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाए और ग्राहकों को बैंक की तकनीकी सुविधाओं और लाभकारी योजनाओं के बारे में समय–समय पर अवगत कराया जाए। कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान भारतीय रिज़र्व बैंक और भारत सरकार की बैंकों से डिजिटल भुगतान की अपेक्षा बढ़ गई है। अत: डिजिटल भुगतान के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का हर संभव प्रयास किया जाए। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा ऋण किश्तों के भुगतान के लिए ग्राहकों को प्रदत्त अतिरिक्त समयावधि अब समाप्त हो गई है, जिसका प्रभाव हमारी लाभप्रदता पर भी पड़ना स्वाभाविक है। आवश्यक है कि सभी अनर्जक आस्ति(एनपीए) और अन्य खातों में वसूली के लिए हम निरंतर प्रयास करें और घर से कार्य (वर्क फ्रम होम) करते हुए भी इस दिशा में कारगर कदम उठाएं जिससे कि हमारे लाभ पोर्टफोलियो में निरंतर वृद्धि हो।

'केनरा ज्योति' पत्रिका, विभिन्न साहित्यिक रचनाओं के अलावा बैंकिंग, आर्थिक तथा तकनीकी क्षेत्र के लेखों को समेटकर एक सुन्दर गुलदस्ते के रूप में सामने आई है। 'केनरा ज्योति' को अपनी रचनाधर्मिता से संवारने के लिए सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं!

शुभकामनाओं सहित,

एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

मुख्य महा प्रबंधक का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे प्रसन्नता है कि 'केनरा ज्योति' पत्रिका के 27वें अंक के माध्यम से अपने विचारों को आप तक पहुंचाने का अवसर मिला है। पत्रिका का प्रयास रहा है कि राजभाषा के प्रचार– प्रसार के साथ बैंक के कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा में निखार लाने का अवसर प्रदान किया जाए।

पदोन्नति परीक्षा में उत्तीर्ण हुए सभी केनराइट्स को बधाई देता हूँ और उनको नई ज़िम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाने के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ देता हूँ। कुछ साथी जो किसी कारणवश पदोन्नति परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाए, उन्हें हतोत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि असफलता हमें अपनी कमियों को सुधारते हुए सफलता की राह पर अग्रसर होने का संबल प्रदान करती है। साथ ही, अपने कार्य में दक्षता हासिल करने का हर संभव प्रयास करना भी आवश्यक है जो वर्तमान बैंकिंग की चुनौतियों का सामना करने में भी मददगार साबित होगा।

बैंक के व्यवसाय में वृद्धि के लिये ग्राहक आधार में बढ़ोत्तरी नितांत आवश्यक है और इसके लिये हमें ग्राहक से जुड़ना होगा। भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे हम अपने ग्राहकों से संबंध मज़बूत कर ग्राहक आधार बढ़ा सकते हैं। बैंक जैसे सेवा क्षेत्र की संस्था द्वारा ग्राहकों से संवाद अथवा पत्राचार की भाषा ग्राहक की भाषा में होनी चाहिए, जिसे ग्राहक आसानी से समझ सके।

हम जानते हैं कि बैंकिंग मूलत: एक सेवा क्षेत्र उद्योग है। केन्द्र सरकार के साथ–साथ राज्य सरकारें भी निरंतर प्रयत्नशील हैं कि हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हो तथा प्रशासनिक स्तर पर इसका अधिकाधिक प्रयोग हो। बैंक जब ग्राहकों से ग्राहकों की भाषा में व्यवहार करेंगे, तभी वे बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। इस पृष्ठभूमि में हमें समर्पित भाव से कार्य करना होगा ताकि भारतीय भाषाओं के साथ–साथ देश के आर्थिक विकास में हम अपना योगदान दे सकें।

मुझे आशा है कि 'केनरा ज्योति' के द्वारा बैंकिंग विषयों के नवीन व मौलिक लेखों से हम सभी के बैंकिंग ज्ञान में भी वृद्धि होगी और हम बैंकिंग के साथ–साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी नित नये आयाम स्थापित करते हुए आगे बढ़ेंगे।

आशा है कि अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर पत्रिका को और भी उत्कृष्ट बनाने में आप महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शुभकामनाओं सहित,

एल.वी.आर. प्रसाद
मुख्य महा प्रबंधक

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय पाठक,

'केनरा ज्योति' का 27वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। ज्ञान निरंतर परिवर्तनशील है। किसी क्षेत्र विशेष में होने वाले शोध व विचार–विमर्श से उस क्षेत्र के विभिन्न आयाम हमारे सामने आते हैं। कोई नया विचार धीरे–धीरे स्वीकृति पाता है, फिर उसके क्रियान्वयन के लिए कौशल के विकास की आवश्यकता होती है जिसमें शिक्षण और प्रशिक्षण की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण और प्रशिक्षण यदि आमजन की भाषा हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में दिया जाता है तो उसमें एक खासा अपनापन महसूस होता है और वह काफी उपयोगी व प्रभावी होता है।

हिंदी भाषा के विकास और इसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए इसमें आधुनिकता का समावेश ज़रूरी है ताकि जन सामान्य इससे जुड़ सके। भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी अब केवल भारत में ही नहीं विदेशों में भी कारोबार की भाषा बनती जा रही है। आज बैंकिंग उद्योग वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion) के माध्यम से गाँव – शहर के वैसे आमजन जो बैंकिंग सेवा से वंचित रह गए थे, उनको जोड़ने का शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। इस परिस्थिति में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, अपितु कहा जा सकता है कि वित्तीय समावेशन के इस युग में भाषा की महत्ता और बढ़ गई है।

साथ ही आज देश की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां, प्रौद्योगिकी एवं सोशल मीडिया के कारण बड़ी तेज़ गति से बदल रही हैं। हमारी राजभाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा भी इससे अछूती नहीं हैं। इसी का परिणाम है कि हमारा सीबीएस राजभाषा हिंदी के साथ–साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध कराया गया है। बैंक द्वारा हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट को एसएएस पैकेज के माध्यम से ऑनलाइन रिपोर्टिंग की सुविधा प्रदान किया जाना भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यदि गतांक से आगे की बात करें तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हमारे बैंक में सीबीएस ही नहीं बल्कि अन्य पैकेज में भी हिंदी सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में ग्राहकों के लिए सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

पाठकों को रुचिकर और उपयोगी रचनाओं के अतिरिक्त, राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के प्रति 'केनरा ज्योति' की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियों को सदैव ही पत्रिका में समुचित स्थान दिया जाता रहा है। अत: आप इस अंक में भी पाएंगे कि राजभाषा गतिविधियों को भी पर्याप्त स्थान प्रदान किया गया है।

आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए हमेशा ही असंभव को संभव बनाने में मददगार साबित होती रही है। अत: आपकी प्रतिक्रिया का हमें बेसब्री से इंतज़ार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

आलेख

सुनील कुमार सोबती
उप महा प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय
दिल्ली

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर): राष्ट्रीयकृत बैंकों का योगदान

समाज शब्द संस्कृत के दो शब्दों 'सम' एवं 'अज' से बना है।'सम' का अर्थ है 'इक्ट्ठा' व एक साथ 'अज' का अर्थ है 'साथ रहना'। इसका अभिप्राय है कि समाज शब्द का अर्थ हुआ एक साथ रहने वाला वह समूह जो निश्चित उद्देश्यों को रखकर निर्मित होता है, जिसे पारस्परिक लाभ, मैत्रीपूर्ण व शान्तिपूर्ण जीवन आदर्शों एवं कार्यों की पूर्ति आदि के रूप में देखे जा सकते हैं। कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) उसी समाज का एक अनिवार्य अंग है, जिसके अंतर्गत विस्तृत माध्यमों से विभिन्न प्रकार की वस्तुएं तथा सेवाएं उपलब्ध करवा कर समाज की आश्यकताओं की पूर्ति होती है। वहीं व्यवसाय का अर्थ है – व्यापार, कारोबार, काम–काज, उद्यम। जीवन में प्रत्येक कार्य का विशेष उद्देश्य होना चाहिए। इसी प्रकार, प्रत्येक व्यवसाय के भी कुछ विशेष उद्देश्य होने चाहिए:

1 **आर्थिक :** लाभ प्राप्त करना।

2 **सामाजिक :** समाज के सामान्य कल्याणकारी कार्यों में तथा कल्याणकारी सुविधाओं में समुचित योगदान करना शामिल है।

3 **मानवीय :** मानवीय उद्देश्यों के अंतर्गत कर्मचारियों की आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संतुष्टि और मानव संसाधनों का विकास निहित है।

4 **राष्ट्रीय :** रोज़गार उपलब्ध करवाना, सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना, देश के राजस्व को बढ़ाना, जिससे देश का विकास हो सके और समाज एवं देश की आत्मनिर्भरता बढ़ सके।

सभी धर्मों की परिभाषा और व्याख्या का निचोड़ है – ''अच्छे बनो'' और ''अच्छा करो''। सभी धर्मों ने एकमत होकर जिस बात पर ज़ोर दिया है, वह है मानवता की सेवा करना, भूखों को भोजन कराना, वस्त्रहीन को वस्त्र देना, बीमार लोगों की देखभाल करना, भटके हुए लोगों को सही मार्ग पर लाना, धर्म का पालन करना आदि। यदि पूर्व के वर्षों में देखा जाय तो बड़े–बड़े साहुकार, व्यवसायी, दान देकर मंदिरों का निर्माण, भण्डारों के ज़रिये गरीबों के खाने का प्रबंधन करते थे, जिसका मूल उद्देश्य समाज में गरीबों की मदद करना था। ये सब कहीं न कहीं सामाजिक दायित्व एवं कल्याण की पूर्ति के प्रमाण की पुष्टि करते हैं। कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) सामाजिक कार्यों का एक नया रूप है। 16वीं सदी में इस सिलसिले में राजस्थान में बावड़ी बनाने का काम काफी हद तक हुआ।

महात्मा गांधी कहते थे कि ''मान लीजिए कि मैं बहुत अधिक धनवान हूं, यह धन–दौलत या तो विरासत या व्यापार और उद्योग के माध्यम से मिला हो। लेकिन मुझे पता है कि ये

धन–दौलत सिर्फ मेरा नहीं है, जो मेरा है वह सम्मानजनक आजीविका है, इससे बेहतर कोई और नहीं हो सकता। मेरी संपत्ति का बाकी हिस्सा समुदाय का है और इसका इस्तेमाल समुदाय के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए।'' कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर) का विकास भारतीय समाज के सांस्कृतिक विकास के लिए बहुत आवश्यक भी था। यही कारण है कि कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) कानून की अनिवार्यता को स्वीकार करना भारत के लिए बहुत मुश्किल नहीं था।

वर्तमान समय में, धीरे–धीरे कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) की क्रांतिकारी प्रक्रिया को पश्चिमी देशों के कॉरपोरेट हाउस ने एक नयी दिशा एवं रूप दिया। तत्पश्चात्, भारत सरकार ने भी इस नये कंपनी अधिनियम की नई धारा 134 के मुताबिक अब उन सभी कंपनियों को निर्देश दिया कि कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर) के तहत अपने मुनाफ़े का 2 फ़ीसदी धन सीधे जनता के सरोकार से जुड़े काम–काज पर ख़र्च करना होगा, जो इसके दायरे में आएंगी। कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर) नियम, कंपनी अधिनियम, 2013 की सातवीं अनुसूची के खंड 135 के तहत परिभाषित है, जो कि 1 अप्रैल 2014 से प्रभाव में आया।

धारा 134 के दायरे में आनेवाली कंपनियां वे हैं –

* जिनकी शुद्ध संपत्ति ₹1000 करोड़ या उससे अधिक हो या;
* जिनका कारोबार ₹ 500 करोड़ या उससे अधिक हो या;
* जिनका शुद्ध मुनाफ़ा ₹ 50 करोड़ या उससे अधिक हो।

कंपनी अधिनियम की अनुसूची 7 में जिन महत्वपूर्ण गतिविधियों को शामिल किया गया है, वे हैं :

1) निवारक स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता और स्वच्छ पेय जल उपलब्धता को बढ़ावा देना।

2) महिलाओं और अनाथों के लिए घर व हॉस्टल, वृद्धाश्रम, दैनिक देखभाल केन्द्र और वरिष्ठ नागरिकों के लिए अन्य सुविधाएं प्रदान करना तथा सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिए असमानता में कमी लाने के उपाय करना।

3) पर्यावरण संतुलन, वनस्पति व प्राणी समूह की सुरक्षा, पशु कल्याण, कृषि वानिकी, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और मिट्टी, जल व वायु की गुणवत्ता सुनिश्चित करना।

4) आजीविका बढ़ाने वाली परियोजनाएं।

5) राष्ट्रीय विरासत, कला व ऐतिहासिक महत्व की इमारतों का संरक्षण व कलाकृतियों सहित संस्कृति की सुरक्षा, सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना और परंपरागत कला व हस्तशिल्प का विकास व संवर्द्धन।

6) सशस्त्र बल के दिग्गजों, युद्ध विधवाओं और इनके आश्रितों के लाभ के लिए कदम उठाना।

7) ग्रामीण खेलकूद, राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त खेलों, पैरा–ओलंपिक खेलों व ओलंपिक खेलों के संवर्द्धन के लिए प्रशिक्षण।

8) केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रौद्योगिकी शिक्षण संस्थानों को अंशदान अथवा निधि के रूप में योगदान देना।

9) ग्रामीण विकास परियोजनाएं।

इस नियम के कार्यान्यवन के संबंध में कुछ कंपनियों का सर्वेक्षण किया गया। अठारह प्रतिशत कंपनियों ने 2% मानदंड का अनुपालन किया था। कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का योगदान अभी भी

बहुत ही कम है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक(पीएसबी) प्राय: गैर–वित्तीय कार्यक्रमों जैसे– रक्तदान और शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों में अपना योगदान दे रहे हैं। साथ ही बहुत से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक(पीएसबी) प्राकृतिक आपदा के समय में प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री राहत कोष में अपना सहयोग दे रहे हैं। बहुत से बैंक अपने कर्मचारियों को भी राष्ट्रीय आपदा के समय स्वेच्छा से योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं।

कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय ने इस संबंध में एक अधिसूचना जारी की है, जिसमें 22 जनवरी, 2021 को उस तारीख के रूप में निर्धारित किया गया है। नई व्यवस्था के तहत यदि कंपनी पूरा कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर) निधि नहीं खर्च कर पाती तो कंपनी को चाहिए कि बची हुई शेष राशि को सरकार द्वारा निर्धारित किसी निधि में अंतरित करे। यदि कंपनी वार्षिक बजट से ज्यादा खर्च करती है तो अगले तीन सालों तक उस रकम को समाहित कर सकती है।

वैश्विक आपदा कोरोना–19 में कंपनियों के अंशदान की अनुमति देने के मकसद से सरकार ने इसे कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर) गतिविधि में शामिल कर दिया है। भारत में कोरोना वायरस के प्रसार को देखते हुए विश्व स्वास्थ संगठन ने इसे वैश्विक आपदा घोषित किया है और भारत सरकार ने इसे आपदा के रूप में अधिसूचित किया है। ऐसे में कोविड–19 के लिए सीएसआर निधि को खर्च किया जा सकता है और यह कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व(सीएसआर) गतिविधि के दायरे में आता है।

केनरा बैंक, हर वर्ष कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत विभिन्न कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक आयोजन के ज़रिए समाज के विभिन्न वर्गों के लिये कल्याणकारी कार्य करता है।

केनरा बैंक अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी– 2021

दिनांक 24.03.2021 को केनरा बैंक, राजभाषा अनुभाग, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा ''डिजिटल बैंकिंग में हिंदी का प्रयोग–संभावनाएं एवं चुनौतियाँ'' विषय पर अखिल भारतीय ऑनलाइन राजभाषा संगोष्ठी–2021 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक(का.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(दक्षिण) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मानव संसाधन विभाग के महा प्रबंधक श्री शंकर एस. द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। मानव संसाधन विभाग के उप महा प्रबंधक एवं राजभाषा अनुभाग के पर्यवेक्षी कार्यपालक श्री एच.एम. बसवराज द्वारा सभी राजभाषा अधिकारियों को संबोधित किया गया। कुल 24 राजभाषा अधिकारियों ने उपर्युक्त विषय पर अपने–अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस अवसर पर, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय से वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री एन.एस. ओमप्रकाश एवं ओम प्रकाश साह, निर्णायक मंडल के रूप में उपस्थित थे। श्रीमती

कीर्ति पी.सी., द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम के समापन के पश्चात् 04 श्रेष्ठ आलेख प्रस्तुतकर्ता राजभाषा अधिकारियों क्रमश: श्री प्रकाश माली, प्रबंधक (राजभाषा) – 'प्रथम', श्रीमती निशा शर्मा, प्रबंधक (राजभाषा)– 'द्वितीय', श्रीमती ऊर्जा श्रीवास्तव प्रबंधक (राजभाषा) – 'तृतीय' एवं सुश्री अंकिता रानी, राजभाषा अधिकारी को 'चतुर्थ पुरस्कार' प्रदान किए गए।

आलेख

दीप्ति किशोर
प्रबंधक
अंचल कार्यालय
राँची

महिला स्वयं सहायता समूह : स्वयं सहायता से राष्ट्र निर्माण की ओर

भूमिका :

भारतीय संस्कृति में 'नारी' की भूमिका, परिवार एवं संस्कार के रचनाकार के रूप में परिभाषित की गयी है। मानव सभ्यता के विकास संबंधी विभिन्न सिद्धांतों में वैज्ञानिक व सामाजिक दोनों ही दृष्टिकोण से 'स्त्री' को महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। वह ही घर बनाती है और प्रथम शिक्षक के रूप में उसके द्वारा स्थापित मूल्यों से परिवार एवं समाज का निर्माण होता है।

वर्तमान समय में आधी आबादी की भूमिका और अधिक व्यापक हो गयी है। नैसर्गिक रूप से जुड़ी सभी ज़िम्मेदारियों और भूमिकाओं के साथ–साथ महिलाएँ आर्थिक एवं वित्तीय मानकों की भी मिसाल बन रही हैं। इसी श्रृंखला में 'महिला स्वयं सहायता समूह का उद्भव एवं प्रसार' वित्तीय विकास के क्षेत्र में अत्यंत असरदार तत्व सिद्ध हो रहा है, जो विशेषकर ग्रामीण एवं अर्धशहरी इलाकों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

उद्भव एवं विस्तार :

सर्वप्रथम, सन् 1972 में एसईडब्ल्युए (सेल्फ एम्पॉवर्ड वुमेन्स असोसिएशन) के गठन द्वारा कपड़ा मिल में कार्यरत महिला मज़दूरों व कारीगरों को एकीकृत किया गया, जिसका उद्देश्य महिलाओं को भोजन, आय एवं सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करवाना था। हालांकि, यह प्रत्यक्ष रूप से स्वयं सहायता समूह नहीं था, परन्तु यह अपने आप में पहला प्रयास था जिसके सिद्धांत वर्तमान के स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के स्थापित मूल्यों के समान थे।

जिस विचार की आधारशिला वर्ष 1972 में रखी गयी, उसे वर्ष 1992 में नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक) द्वारा पोषित योजना ''एसएचजी– बैंक लिंकेज कार्यक्रम'' द्वारा मूर्त रूप मिला।

नाबार्ड के तत्वावधान में सरकारी बैंकों एवं सहकारी वित्तीय संस्थानों के समग्र प्रयास द्वारा वर्तमान में यह योजना विश्व की सबसे बड़ी सूक्ष्म साख (माइक्रो क्रेडिट) योजना के रूप में उभर कर सामने आई है। जागरूकता अभियान एवं प्रशिक्षण द्वारा एसएचजी के गठन व क्रियान्वयन को सटीक दिशा प्रदान की गई जिसके परिणामस्वरूप, दिनांक 31.03.2019 तक ₹ 23,324 करोड़ की जमा–पूंजी के साथ भारत में कुल एक करोड़ महिला एसएचजी (जिनमें 12 करोड़ परिवार समाहित हैं) सक्रिय हैं।

महिला स्वयं सहायता समूह : विकास की नई इकाई :

वर्तमान में महिला स्वयं सहायता समूहों की गणना कृषि एवं ग्रामीण विकास के नवीनतम आयामों में की जाती है। इस संदर्भ में उनकी भूमिका निम्नलिखित बिंदुओं में परिलक्षित होती है।

1. वित्तीय समावेशन :

लाभार्थी एवं प्रवर्तक : स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाएं, दो तरीके से वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं।

पहला – स्वयं संगठन से जुड़कर विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होना।

दूसरा – समूह के सदस्यों द्वारा अन्य महिलाओं, वृद्धों एवं कृषकों को भी वित्तीय जानकारी प्रचारित एवं प्रसारित कर लाभान्वित करवाना।

लाभार्थी एवं प्रवर्तक दोनों ही रूप में एस.एच.जी. ने विभिन्न योजनाओं जैसे – प्रधानमंत्री जन–धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना को सफल बनाया है। सरकार द्वारा ग्रामीण विकास संबंधी नई योजनाओं व नीतियों का सूत्रीकरण भी महिला स्वयं सहायता समूह को केंद्र में रखकर किया जा रहा है।

2. महिला स्वयं सहायता समूह – एक आर्थिक इकाई: बैंक लिंकेज कार्यक्रम द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह अपने आप में एक सूक्ष्म साख इकाई (माइक्रो क्रेडिट एंटिटी) के रूप में उभरे हैं। यह एक ऐसे समूह हैं जो बैंकों से ऋण प्राप्त कर (अर्थात् समूह के अंदर सदस्यों को ऋण देना) एवं पुनर्वित्तीयन द्वारा छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन किसान, कामगार मज़दूर जैसे ज़रूरतमंद वर्गों को उचित दरों पर ऋण मुहैया करवाते हैं। इस प्रकार महिला स्वयं सहायता समूह स्वयं एक वित्तीय संस्थान की भूमिका का निर्वाह करती है।

इसके अतिरिक्त, ऋण की राशि से समूह की महिलाएं मिलकर कृषि एवं कृषि संबंधी व्यवसाय अर्थात् पशुपालन, नर्सरी, मशरूम उत्पादन, सिलाई–बुनाई, हस्तशिल्प जैसे व्यवसाय अपनाकर अल्प प्रयासों से बड़ी सफलता अर्जित करती हैं। साथ ही अतिरिक्त आय कमा कर अपने परिवार के जीविकोपार्जन में सहयोग प्रदान करती हैं। एक–एक सदस्य से समूह की ताकत बढ़ती है और समूह की ताकत के बढ़ने के फलस्वरूप, परिवार एवं समाज की समृद्धि सुनिश्चित होती है। यही कारण है कि सरकार द्वारा भी महिला स्वयं सहायता समूह को सुदृढ़ बनाने हेतु विभिन्न योजनाएं विकसित की गई हैं जिनमें संपार्श्विक रहित ऋण, न्यूनतम ब्याज दर, ब्याज़ आर्थिक सहायता, ब्याज़ प्रोत्साहन, दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, सब्सिडी युक्त एग्री इंफ्रास्ट्रक्चर स्कीम, खाद्य संसाधन योजना सम्मिलित हैं। यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि जहां तक महिला स्वयं सहायता समूह को प्रदान किए जानेवाले ऋण की बात है, ऐसे ऋण बहुत कम हैं जो अनर्जक आस्ति में परिवर्तित होते हैं।

3. महिला स्वयं सहायता समूह सामाजिक उत्थान का प्रवर्तक : महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह के प्रयासों द्वारा समाज में फैली कई कुरीतियों जैसे– दहेज प्रथा, महिला उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, मद्यपान, कुपोषण के निवारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिला स्वयं सहायता समूह हाशिए पर खड़े वर्ग (जिनमें सीमांत किसान, भूमिहीन किसान, स्थानीय मज़दूर शामिल हैं) का संबल बन उनकी समस्याएं प्रशासन तक पहुंचाने में मदद करते हैं। यही कारण है कि सरकार ने भी अपनी दाल–भात योजना, मध्याह्न भोजन योजना, पीडीएस खाद्य वितरण, दीदी किचन, स्वच्छता अभियान, जच्चा–बच्चा स्वास्थ्य योजना जैसी कल्याणकारी योजनाओं को स्वयं सहायता समूह के द्वारा क्रियान्वित करवाया है। इन प्रयासों से सरकारी योजनाओं के प्रसारण एवं समावेशन में मदद तो मिली ही, साथ ही स्वयं सहायता समूह को भी पथ प्रदर्शक के रूप में स्थापित किया है। समाज का वह भेद जो पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की क्षमता को कमतर आंकता है, महिला स्वयं सहायता समूह के द्वारा इसे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कम किया गया है। विकास की यह श्रृंखला इतनी व्यापक होती जा रही है कि इसकी शाखाएं अर्ध–शहरी एवं शहरी परिवेश में भी तेज़ी से फैल रही हैं।

4. महिला स्वयं सहायता समूह – कोरोना वारियर के रूप में: गत एक वर्ष से संपूर्ण विश्व कोविड–19 महामारी से जूझ रहा है। इस कठिन समय में महिला स्वयं सहायता समूह ने भी कोरोना वारियर के रूप में राष्ट्र व समाज को अपनी सेवाएं दी। सिर्फ अप्रैल माह में ही बीस हज़ार समूह ने 19 मिलियन मास्क एवं एक लाख लीटर सैनिटाइज़र का उत्पादन किया। विस्थापित मज़दूरों की सहायता हेतु झारखंड राज्य में 24x7 'दीदी हेल्पलाइन' सेवा शुरू की गई जो महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा संचालित थी।

केरल के 'कुडुम्बश्री महिला समूह' ने अपने नेटवर्क द्वारा कोरोना के प्रति जागरूकता अभियान चलाया, साथ ही 1300 किचन के द्वारा विस्थापितों को लॉकडाउन में राशन एवं भोजन उपलब्ध कराया। महाराष्ट्र के ''मावियम (MAVIM) महिला आर्थिक विकास महामंडल'' के स्वयं सहायता समूह ने अपने द्वारा बचत की गई राशि को मुख्यमंत्री रिलीफ फंड में प्रदान किया। उपरोक्त उल्लिखित प्रयास उन असंख्य प्रयासों की झलक मात्र है जो महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह के रूप में प्रदान किया।

निष्कर्ष :

स्वयं सहायता समूह की स्थापना महिलाओं के व्यक्तित्व के नैसर्गिक गुणों – बचत की आदत, पारस्परिक सहयोग, संगठन के प्रति प्रतिबद्धता के आधार पर की गई है। इन गुणों के कारण ही समूह को संगठित एवं एकीकृत बने रहने की शक्ति मिलती है। स्वयं सहायता समूह से महिलाओं व उनके परिवारों को आर्थिक बल मिला है। आर्थिक सुदृढ़ता से आत्मिक संबलता और इसके परिणामस्वरूप महिलाओं को निर्णयकर्ता के रूप में सामाजिक स्वीकार्यता मिली है। दशकों से आधी आबादी को आर्थिक एवं सामाजिक न्याय दिलाने की लड़ाई चल रही है। इस संघर्ष में हम बहुत हद तक सफल भी हुए हैं, परंतु सुदूर क्षेत्रों में इसकी जड़ें और मज़बूत करने की आवश्यकता है। स्वयं सहायता की आधारशिला ने महिलाओं में नेतृत्व एवं आर्थिक विकास को बल प्रदान किया है।

छोटे प्रयासों से बड़ी सफलता का मार्ग प्रशस्त होने से आत्मविकास की यह यात्रा अब राष्ट्र निर्माण व सामाजिक विकास के लक्ष्य को हासिल कर रही है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि महिला स्वयं सहायता समूह 'लैंगिक समानता' का नया आयाम है। वित्तीय संस्थानों के रूप में हमारी यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि हम, हमारे बैंकों एवं सरकार की विभिन्न स्वयं सहायता समूह केंद्रित योजनाओं का लाभ महिलाओं को अधिक से अधिक उपलब्ध करवाएं। आर्थिक एवं सामाजिक विकास की इस कड़ी को मज़बूती प्रदान करें, क्योंकि यह राष्ट्र निर्माण के साथ–साथ हम सभी के आत्मविकास का भी मार्ग है।

विचार–बिंदु

''खुशी और संतुष्टि मनुष्य जीवन
के दो पहलू हैं,
खुशी से संतुष्टि मिलती है
संतुष्टि से खुशी मिलती है,
परंतु फर्क बहुत बड़ा है
''खुशी'' थोड़े समय के लिए
संतुष्टि देती है और ''संतुष्टि''
हमेशा के लिए खुशी देती है।''

विचार–बिंदु

''पानी को कितना भी गर्म कर लें
पर वह थोड़ी देर बाद अपने मूल स्वभाव
में आकर शीतल हो जाता है।
इसी प्रकार हम कितने भी क्रोध, भय,
अशांति में रह लें,
थोड़ी देर बाद शांति, निर्भयता,
और प्रसन्नता में हमें आना ही होगा
क्योंकि यही हमारा मूल स्वभाव है।''

आलेख

सीमा
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली

संबंधों की महक

बैंक में ऑफिसर की नौकरी पाकर, मैं बहुत खुश था। भारतीय समाज में सरकारी बैंक में नौकरी मिलना आज भी बहुत सम्माननीय बात है। घर में सभी बहुत खुश थे। मन में एक उमंग और उत्साह लिये मैं रोज़ समय पर बैंक पहुँच जाता था। मुझे सर्वप्रथम बचत खाता विभाग का काम दिया गया, जिसे कासा विभाग भी कहते हैं। यह वह विभाग है जिसमें सबसे ज्यादा भीड़ रहती है। हमारी शाखा नयी तो थी, साथ ही दिल्ली के एक ऐसे इलाके में थी जो कुछ पिछड़ा हुआ है। यहाँ प्राय: कम आय वर्ग के लोग ही अधिक आते थे। नयी शाखा होने के कारण शाखा परिसर के कुछ काम अभी अधूरे थे। शाखा में काँच के दरवाज़े के बाद चैनल लगा था, परन्तु अभी लोहे का शटर भी नहीं लगा था।

एक दिन सुबह–सुबह जब मैं शाखा पहुँचा तो वहाँ की हालत देख मैं दंग रह गया। मेरी आंखें हैरानी से भर गईं। ये क्या, एक व्यक्ति शाखा के बाहर खटिया पर सोया हुआ है, क्योंकि अभी शटर नहीं लगा था तो चैनल वाले दरवाज़े के पीछे काँच के शीशे में बड़ा सा सुराख देख मैं बहुत डर गया था। शायद किसी ने तोड़ दिया था। मन घबराने लगा। किसी अनहोनी का डर महसूस कर मेरा खून सूखने लगा। कहीं कोई चोरी तो नहीं हो गई? शाखा की चाबी मेरे पास थी। इस विचार मात्र से साँसें तेज़ हो गई। कुछ सूझ नहीं रहा था। दिमाग सुन्न हो गया था। मैंने उस बाहर सो रहे आदमी को उठाया।

वह उठते ही बोला, ''मैनेजर साहब, आप घबराओ नहीं आपकी शाखा का कुछ नुकसान नहीं हुआ है। इस इलाके में ऑफिसर को भी लोग मैनेजर ही बोलते हैं।''

''क्या साहब, हुआ क्या''? मैं घबराहट में उससे पूछने लगा।

वह बोला, ''साहब मैं पास में ही रहता हूँ। कल रात जब मैं शाखा के बाहर से निकल रहा था तो देखा इस इलाके के कुछ शरारती लड़के दरवाज़े के पास खड़े होकर कुछ मस्ती और बातें कर रहे थे। मुझे किसी अनहोनी की आशंका हुई तो मैंने उनसे कहा कि वो यहाँ क्या कर रहे हैं और क्यों खड़े हैं? वो बहुत बदतमीज़ी से बोले, ''अरे अंकल आगे जाओ।'' मुझे शक हुआ कि कहीं वो आपके बैंक को नुकसान ना पहुँचाए। मैं दौड़ कर गया और अपने कुछ और साथियों को लेकर यहां आ गया। उनको भगाने की कोशिश करने में एक लड़के ने पत्थर मारकर मुख्य दरवाज़े का शीशा तोड़ दिया। फिर मैं और मेरे साथी रात में यहाँ पहरा देने लगे। मैं अपनी खटिया यहीं ले आया और यहाँ सुबह शायद आँख लग गई।'' सारी बात सुनकर मेरी जान में जान आई। मन उनके इस उपकार से गदगद था। आंखें नम थीं। मैंने उनका हाथ पकड़ कर धन्यवाद किया। बार–बार धन्यवाद मुँह से निकल रहा था।

वह बोला, ''अरे साहब, धन्यवाद के पात्र तो आप हैं। आप जानते नहीं कि आपने मुझ पर कितना बड़ा उपकार किया है।''

मैं हैरान होकर उसे देखने लगा। अरे भाई साहब, मैंने आप के लिए क्या किया? कब किया?

वह बोला, अरे साहब, ''आप बड़े लोग हैं, आप भूल गये पर हम कभी नहीं भूलते हैं। मेरा नाम रामदीन है। मैंने कितने बैंकों के चक्कर काटे किसी ने मेरा खाता नहीं खोला साहब। मैंने इस इलाके के सभी बैंकों में जाकर गिड़गिड़ाया पर इस गरीब की आप ने ही सुनी। आपने मेरा खाता अपनी शाखा में खोला । आपका उपकार मैं कभी नहीं भूल सकता साहब। यहाँ मैं मज़दूरी करता हूँ। एक साहब ने मेरे लाख मना करने पर भी मुझे हज़ार रुपये का चेक दिया। पिछले दो महीने से मैं बैंकों में खाता खुलवाने को भटक रहा था। आपने इस गरीब की इतनी मदद की, मेरा खाता खोल दिया। अगर बैंक को कुछ हो जाता तो आँच तो आप पर भी आती साहब।

मैं हैरान ही नहीं, नतमस्तक और आँखों में पानी लिए सुनता रहा। मुझे इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि अपना कार्य ईमानदारी से करने का फल इतना मीठा हो सकता है। मैंने तो बस अपना रोज़ का काम किया था।

ये सत्य मुझे इजाज़ इब्राहीम जो इस कहानी में उस शाखा के कासा अधिकारी थे, उन्होनें प्रशिक्षण केन्द्र में रिफ्रेशर प्रोग्राम में, ग्राहक सेवा के सत्र में बताया था। मैंने सोचा मानवीय संबंधों के इतने सुन्दर और सकारात्मक रूप को आप सभी के साथ साझा करूँ। देखिए, आप सभी को बैंक में काम करते हुए, आपके संग भी संबंधों की महक लिए कोई सकारात्मक कहानी ज़रूर याद आ गई होगी।

अपनी सोच को ऊँचा रखना

एक आदमी ने देखा कि एक गरीब बच्चा उसकी कीमती कार को निहार रहा है। उसे रहम आ गया और उसने उस बच्चे को अपनी कार में बिठा लिया। बच्चे ने आदमी से पूछा – ''आपकी कार बहुत महंगी है ना?'' आदमी ने जवाब दिया – ''हां, मेरे बड़े भाई ने मुझे उपहार में दी है।'' फिर बच्चे ने कहा – ''आपके बड़े भाई कितने भले इंसान है''। जवाब में आदमी ने कहा – ''मुझे पता है तुम क्या सोच रहे हो?'', तुम भी ऐसी कार चाहते हो ना? बच्चे के मुंह से यह जवाब निकला – ''नहीं, मैं भी आपके बड़े भाई जैसा बनना चाहता हूं, मेरे भी छोटे भाई, बहन हैं ना''...! उस बच्चे की गज़ब की सोच पर वह आदमी हैरान रह गया।

आलेख

मनोज कुमार त्यागी
एकल खड़की परिचालक
क्षेत्रीय कार्यालय
दिल्ली

संकेत

आज न जाने क्यों मुझे अपने नानाजी की बहुत याद आ रही है। बचपन में कितना उत्साह होता था उनसे मिलने के लिए। जब कभी माँ कहती कि ननिहाल जाना है, तो मन झूम उठता।

नानाजी गाँव में रहा करते थे। बड़े मामा जी का परिवार भी साथ रहता था। गर्मी की छुट्टियाँ बिताने वहाँ जाते व सभी भाई–बहनों के साथ आम के बागों में मस्ती करते। छुट्टियाँ तो लगता जैसे पलक झपकते ही बीत जाती।

मुझे उन दिनों भूत–पिशाच से बहुत घबराहट होती थी। हमेशा बत्ती जला कर ही सोया करता था। एक दिन मैं इसी तरह रात में सो रहा था कि अचानक बत्ती बुझ गई। मैं घबराकर उठ गया और ज़ोर–ज़ोर से रोने लगा। तभी नानाजी की प्यार भरी आवाज़ सुनाई दी ''अरे! क्यों रो रहे हो? बत्ती मैंने बुझाई है'' मैंने कहा – ''पहले बत्ती जला दीजिए, मुझे अंधेरे से डर लगता है कि कहीं भूत न आ जाए।''

नानाजी ने बत्ती जलाई और कहा–''बेकार ही घबराते हो, भला आज की दुनिया में कोई भूत–वूत होता है क्या? ऐसा कुछ नहीं है, इस दुनिया में''।

''क्यों नहीं होता?'' – मैंने जवाब में कहा, ''बिलकुल भूत पिशाच होते हैं और वह छोटे बच्चों का शिकार भी करते हैं, पर रोशनी में उनकी शक्तियाँ खत्म हो जाती हैं। इसलिए, मैं हमेशा बत्ती जलाकर सोता हूँ। मेरे दोस्त राजू ने मुझे भूतों के कई किस्से सुनाए हैं।''

नानाजी फिर बोलें ''अरे, कोई भूत–वूत नहीं होता ये तो सब मनगढ़ंत कहानियां हैं, यूं ही नहीं घबराया करते।'' मैंने फिर जवाब दिया ''अच्छा, अगर भूत–वूत नहीं होता तो दीजिए सबूत– है कोई सबूत आपके पास?''

नानाजी सोच में पड़ गए और फिर बड़े ध्यान से मेरी तरफ देखते हुए कहने लगे ''हाँ, है सबूत – पर यह सबूत मैं तुम्हें अभी नहीं दिखा सकता, पर मरने के बाद ज़रूर दिखा दूंगा।''

''मरने के बाद कैसे?'' – मैंने कहा। नानाजी ने जवाब दिया– ''मरने के बाद मैं शरीर से आत्मा बन जाऊंगा और मेरी आत्मा पूरे ब्रह्मांड में घूमेगी, ऐसे में मुझे कोई भूत मिला तो तुम्हारे लिए कोई संकेत ज़रूर छोड़ जाऊंगा।''

''संकेत? कैसा संकेत?'' – मैंने पूछा। अब मैं पूरी तरह जाग गया था तथा नींद गायब हो चुकी थी।

तुम हर रोज़ अपने कमरे की खिड़की के पास मेरा संकेत ढूँढ़ना, लेकिन याद रखना, यह संकेत तुम्हें सुबह छ: बजे ही दिखाई देगा, न एक मिनट कम, न एक मिनट ज्यादा, अगर छ: बजे नहीं ढूंढा तो यह संकेत दिखाई ही नहीं देगा।

इन बातों ने मेरे नन्हे मन पर भारी प्रभाव डाला।

कुछ साल बाद नानाजी का देहांत हो गया। मुझे उनकी भूत वाली बात याद रही। मैं रोज़ सुबह जल्दी उठ जाता और ठीक छ: बजे

खिड़की के पास संकेत ढूँढ़ने में लग जाता, मुझे अपने नानाजी पर पूरा भरोसा था। पर जब कई साल बीतने पर भी जब मुझे कोई संकेत नहीं मिला तो हताश होकर एक दिन माँ से कहा– ''माँ, नानाजी झूठ बोलते थे, उन्होंने मेरे लिए कोई संकेत नहीं छोड़ा।''

''संकेत, कैसा संकेत?'' माँ ने पूछा। फिर मैंने माँ को सारा किस्सा सुना डाला। कैसे मैं भूत–प्रेत से घबराया करता था और नानाजी का वो वाक्य जहां पर उन्होंने कहा था कि मैं कोई निशानी छोड़ जाऊंगा। मेरा वो हर दिन जल्दी उठना और ठीक छः बजे खिड़की के पास संकेत ढूँढना।

माँ ने मेरी पूरी बात सुनी और मुस्कराई, मेरी तरफ स्नेह भरी नज़रों से देखकर कहा ''अब समझ में आया कि तुम इतनी जल्दी क्यों उठते हो। मैं तुम्हारी देर से जागने की आदत से परेशान थी और एक दिन मैंने यह बात तुम्हारे नानाजी को बताई थी।''

मैं हक्का–बक्का रह गया और अपना मुंह खोल माँ की तरफ देखता रह गया। अब, असली बात मेरी समझ में आ गई थी। नानाजी ने बातों ही बातों में मुझ में रोज़ सुबह जल्दी से उठने की आदत अनायास ही डाल दी थी।

'मां की ममता'

अमित कुमार
अधिकारी
अंचल कार्यालय
पटना

मां की ममता का कोई मोल नहीं
मां जैसा कोई अनमोल नहीं!
मां डांटती है, मारती है, फटकारती है
पर चोट तो मां को भी होती है!

कभी हंसाती, कभी रुलाती
हर बार मां, हमें मनाती!
रूठ कर हम खाना नहीं खाते
मना कर हमें हर निवाला खिलाती!

बचपन में अगर गिर जाते तो
मानो मां की सांसें अटक सी जाती!
थोड़ा सा बीमार पड़े तो,
रात भर मां सो नहीं पाती!
मां की दुनियां उसके बच्चे हैं
उन्हीं में सिमट के रह जाती!

हमारी गलतियों पर हमें टोकती हैं,
गलत राहों पर जाने से रोकती हैं!
सही–गलत का फर्क समझाती हैं,
सही मायनों में एक अच्छा इंसान बनाती हैं!

आसान नहीं होता मां का फ़र्ज़ निभाना,
आसान नहीं होता मां का कर्ज चुकाना!
मां हमेशा घोलती है,
रिश्तों में प्रेम की भावना!

मां को आता है, बखूबी घर संभालना,
हर विपदा में भी धैर्य से मुस्कराना
घर में सभी का हौसला बढ़ाना
अपने सपनों को बेचकर,
हमारे सारे सपने सच कराना
आसान नहीं होता मां का फर्ज निभाना!

मां की फटकार में भी, प्यार की मिठास है!
मां की खुशी से ही, जीवन में उल्लास है!
मां की ममता जैसा प्यार कहां,
मां की चरणों में ही सारा संसार है,
मां की महिमा तो ज़ग में अपरंपार है !

आलेख

श्वेता शर्मा
परिवीक्षाधीन अधिकारी
टेल्को कॉलोनी
जमशेदपुर शाखा

उदयपुर की अविस्मरणीय यात्रा

उदयपुर की यात्रा के लिए जनवरी का महीना बहुत ही उत्तम होता है क्योंकि उदयपुर में गर्मी बहुत ज्यादा होती है, लेकिन जनवरी में घूमना अति मनोरम होता है। उदयपुर में जनवरी का माह दिन में सुकून देनेवाला होता है और रात में हल्की ठंड एक अलग सा अनुभव देती है। इसी कारणवश मैं और मेरे कुछ मित्र उदयपुर की यात्रा के लिए जनवरी की शुरुआत में निकले। हमने दिल्ली से रात में बस की यात्रा की ताकि सुबह–सुबह हम सब घूमने का आनंद ले सके। सुबह उदयपुर शहर पहुंचने के बाद हमने एक कमरा लिया, वहां कुछ देर ठहरने के बाद हम अपनी यात्रा के लिए ऑटो करके निकल गए।

सबसे पहले हम अपनी यात्रा के पहले दिन ''अरावली वाटिका गार्डन देखने गए।'' वहाँ के मनोरम दृश्य ने हमें आनंदित किया, उसके कुछ दूर में ही फतेह नगर झील स्थित है जो काफी सुंदर दिखता है। ''फतेह नगर'' की झील में नौका विहार का मज़ा ही अलग सा है। वैसे तो उदयपुर झीलों का शहर है, लेकिन ''फतेह नगर'' का झील काफी बड़ा और गहरा है। नौका विहार के लिए कुछ शुल्क लिया जाता है, किन्तु आपकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है। अगर कभी भी उदयपुर जाएं तो एक बार नौका विहार ज़रूर करें क्योंकि इसका एक अलग ही आनंद है।।

नौका विहार का आनंद लेने के बाद हम लोग गुलाब का बग़ीचा देखने गए। अति मनोरम दृश्य था। यह पूरी यात्रा हम लोगों ने एक ही ऑटो में पूरा किया। यह यात्रा हमें ''सहेलियों की बाड़ी'' में ले गयी अर्थात् सहेलियों के घर। यहाँ पूरा पार्क फूलों एवं पेड़–पौधे से भरा हुआ हरा–भरा है। यहाँ पर आप बहुत सी खरीददारी भी कर सकते हैं। राजस्थानी कपड़ों को पहन कर फ़ोटो खिंचवाने का अलग ही मज़ा है। आपको इतने सुंदर तरीके से सजा दिया जाएगा कि आप खुद को राजस्थानी समझने लगेंगे। फ़ोटो खिंचवाने की अलग ही भीड़ होती है। कुछ दृश्य ऐसे थे कि अपने मित्रों के संग फ़ोटो खिंचवाए बिना वापस नहीं आएंगे। उदयपुर में आपको राजस्थानी खाने का स्वाद बहुत ही भाएगा।

इसके बाद, उदयपुर की सबसे मशहूर जगह ''सिटी पैलेस'' जाना हुआ। ''सिटी पैलेस'' में ईसा पूर्व 1700 के बने हुए महल देखने का लुत्फ आप उठा सकते हैं। यह इतनी बड़ी जगह है कि आप पूरा घूमते हुए थक जाएंगे लेकिन जगह खत्म नहीं होगी। ''सिटी पैलेस'' के किनारे एक झील है, जहां आप बैठकर सुकून से झील को देखते ही रह जाएंगे। इसी जगह कुछ नए होटल भी हैं जो पुराने ज़माने के अंदाज़ में आपको राजा–महाराजा होने का अनुभव भी कराते हैं। ''सिटी पैलेस'' एक संग्रहालय है जहां पुरानी चीज़ों का संकलन है। आप एक ओर से दूसरी ओर जब संग्रहालय से निकलते हैं तो वहाँ एक बहुत ही प्राचीन मंदिर (जगदीश मंदिर) है जो काफी ऊँचा है, वहाँ ज़रूर जाएं। कुल मिलाकर ''सिटी पैलेस संग्रहालय'' हमें हमारे इतिहास से जोड़ता है। आज भी ''सिटी पैलेस संग्रहालय'' काफी साफ और स्वच्छ है और किसी विदेश से कम नहीं लगेगा।

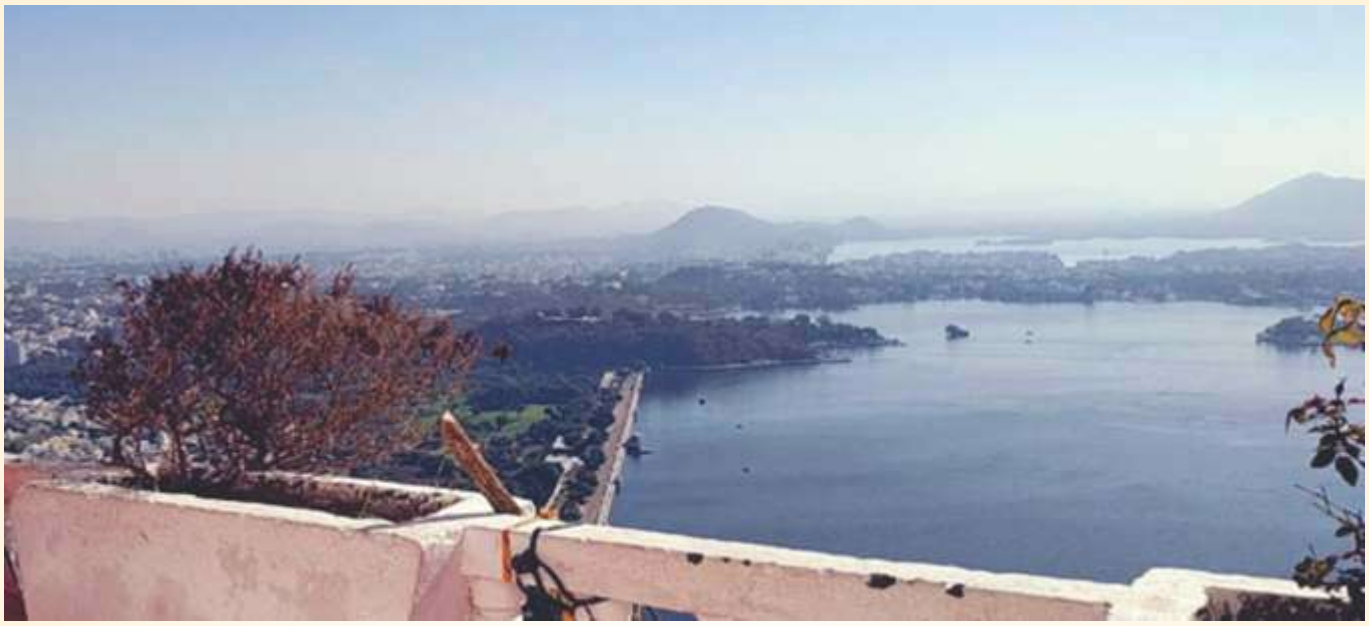

उदयपुर की यात्रा में आगे बढ़ते हुए हम ''करणी माता के मंदिर'' गए। इस मंदिर की विशेषता यह है कि आप यहाँ सीढ़ी या लिफ्ट से नहीं जा सकते। इसके लिए ''रोपवे'' का इस्तेमाल करना पड़ता है। जब आप ''रोपवे'' से ऊपर मंदिर की तरफ जाते हैं तो नीचे झील और गहरा जंगल दिखता है, साथ ही ''रोपवे'' से आपको पूरा उदयपुर शहर दिखाई देगा। आप यहाँ की खूबसूरती में खो जाएंगे। मंदिर की खास बात यह है कि यहाँ चूहे बहुत हैं और मंदिर के ऊपर एक होटल है जहां शाम के समय अति सुंदर वातावरण होता है। शाम की रोशनी में झीलों का शहर और भी खूबसूरत लगता है। वापस आने के लिए भी ''रोपवे'' ही एकमात्र मार्ग है। शाम में उदयपुर की किसी भी जगह आप रुक कर खरीददारी करें और फिर थोड़ा आराम फरमाएं।

अगले दिन आप चाहें तो बाकी की जगह घूम सकते हैं, लेकिन हम सब लोगों ने अगले दिन ''माउंट आबू'' घूमने की योजना बनाई। ''माउंट आबू'' के लिए हम सब सुबह ही बस से निकाल पड़े। माउंट आबू की पूरी यात्रा काफी रोचक रही। ''माउंट आबू'' काफी ऊंची पहाड़ी पर स्थित है और रास्ता काफी घुमावदार है। आप पूरी यात्रा के दौरान आस–पास के नीले आसमान और हरे–भरे दृश्य देखते हुए जाएंगे। ''माउंट आबू'' पहुंचने के बाद आप उसी दिन वहां रुक जाएं तो बेहतर होगा। यह शहर काफी छोटा सा है, लेकिन इस छोटे से शहर की यादें आपको हमेशा याद रहेंगी। यहाँ रुकने के लिए बहुत से लॉज या होटल मिल जायेंगे। ''माउंट आबू'' घूमने के लिए टैक्सी की सुविधा मिल जाती है। अगर आपके पास समय हो तो आप बहुत सी जगह एक दिन में ही घूम सकते हैं। सबसे पहले हम ''अचलेश्वर महादेव मंदिर'' गए, इस जगह में पुरानी फिल्मों की जैसी अनुभूति मिलेगी। इसके बाद, हम सब दिलवारा मंदिर भी गए जो कि जैन मंदिर है। यहाँ पर आपको फोटो खींचने की मनाही है। इसके बाद, हम सब ''शांति पार्क'' जिसे ''यूनिवर्सल पीस हॉल'' भी कहते हैं, चले गए, यहाँ आपको बिठाकर शांति और ज्ञान की बातें बताई जाएंगी। यहाँ पर भी फोटो खींचने की सख्त मनाही है और इसका उल्लंघन होने पर ₹ 500 का जुर्माना भी लगाया जाता है। इन सब के बाद भी आपको यह जगह आपके बचपन में ले जाएगी।

''गुरुशिखर पर्वत'' हमारा अगला पर्यटन स्थल था जो कि सबसे ज्यादा ऊँचाई पर है और इसमें जाने के लिए कैब से भी जाना एक कठिन मार्ग है। सड़कें काफी अच्छी हैं, आप पूरे रास्ते का आनंद उठा सकते हैं। हरे–भरे पेड़, चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है। कैब से उतरने के बाद आपको सीढ़ियों से ऊपर मंदिर जाने का रास्ता मिलता है। सबसे ऊँचाई में पहुँच कर आपको अत्यंत ही खुशी की अनुभूति होगी। यहाँ फोटो खिंचवाने में कोई मनाही नहीं है, लेकिन अपनी सुरक्षा को ध्यान में रख कर ही यात्रा का आनंद लें। इस पर्वत की ऊँचाई से आपको पूरा आबू पर्वत दिखाई देगा और यह भी दिखाई देगा कि आप कितनी ऊँचाई पर पहुँच गए हैं। इसके बाद, हम लोग ''सनसेट पॉइंट'' गए जहां का सूर्यास्त अगर आपने नहीं देखा तो फिर ''माउंट आबू'' आना बेकार सा लगेगा। यहाँ ''सनसेट

पॉइंट'' तक जाने के लिए आप घोड़े की सवारी भी कर सकते हैं। सूर्यास्त से पूर्व ''सनसेट या लवर्स पॉइंट'' में आपको जो दृश्य दिखेगा वह ऐसा लगेगा कि सचमुच आसमान और ज़मीन एक–दूसरे से मिल रहे हैं। यह दृश्य काफी खूबसूरत है जिसे किसी कैमरे की जगह आप अपनी आँखों में कैद कीजिये। ''सनसेट पॉइंट'' से आते समय आप ''नक्की लेक'' ज़रूर जाएं। अंधेरे में आर्टिफ़िशियल रोशनी से यह झील काफी सुंदर लगती है। यहाँ भी आप अपना समय अच्छे से गुज़ार सकते हैं। यहाँ भी लोग राजस्थानी वेशभूषा में फोटो खिंचवाते हैं।

''माउंट आबू'' की ठंड में आइस क्रीम खाने से इस जगह में आने का मज़ा दोगुना हो जाता है। अगर आप प्रकृति से प्रेम करते हैं तो आपको यह जगह काफी अच्छी लगेगी। आप यहाँ के बाज़ार में खरीददारी का मज़ा ज़रूर ले सकते हैं।

अपने अगले दिन की यात्रा के लिए हम सुबह ''माउंट आबू'' से निकल गए। ''माउंट आबू'' से वापस हम उदयपुर गए और वहां से हम कुछ और जगह घूमने के लिए निकले। हम ''नीमच माता के मंदिर'' गए जो कि बहुत सी सीढ़ियों पर चल कर ही जा सकते हैं। इस मंदिर में जाने के दो रास्ते हैं, एक तो सीढ़ी से और दूसरा चल कर घुमावदार रास्ते से होकर जाना। दोनों ही रास्तों का अलग मज़ा है। यह मंदिर भी काफी ऊँचाई पर स्थित है, इसलिए यहाँ से भी उदयपुर के सारे झील नज़र आते हैं। इसके बाद, हम ''सज्जनगढ़ मॉनसून पैलेस'' भी गए। यहाँ से हम ''शिल्प ग्राम'' गए जहां राजस्थान की संस्कृति आपको देखने को मिलेगी और पूरा गाँव वाला अनुभव प्राप्त होगा। ''शिल्प ग्राम'' में आप ऊँट की सवारी भी कर सकते हैं, मिट्टी की बनी कलाकृतियाँ काफी मनोरम लगी। हमारी यात्रा तो इसी जगह खत्म हो गयी, लेकिन उदयपुर में घूमने के लिए और भी बहुत सी जगह हैं। उदयपुर की हमारी यात्रा काफी यादगार रही। इस जगह की खूबसूरती को शब्दों में बयान कर पाना थोड़ा कठिन है लेकिन दिल में यादें संजो के रखी जा सकती हैं।

जीवन का मायना

एक महिला रविवार सुबह अपने घर के पास वाले पार्क के एक बेंच पर जा बैठी। उसी बेंच पर एक और आदमी बैठा हुआ था। महिला ने लाल टी–शर्ट पहने एक छोटे लड़के की ओर इशारा करते हुए उस आदमी से कहा– ''जो झूला झूल रहा है, वह मेरा बेटा है।'' उस आदमी ने जवाब में कहा कि ''आपका लड़का काफी सुंदर है।'' उसने ब्लू टी–शर्ट पहने एक लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा,''वो देखिए, जो कसरत करने में लीन है, वह मेरा बेटा है।'' अपनी घड़ी की तरह देखते हुए आदमी ने अपने बेटे से कहा– ''नीलकंठ, क्या हम घर चलें?''। नीलकंठ ने निवेदन किया, ''बस पाँच मिनट, पिताजी, बस पाँच मिनट और।'' आदमी ने सिर हिलाया और नीलकंठ फिर कसरत में लीन हो गया। कई मिनट बीत गए तो पिताजी खड़े हो गए और फिर से अपने बेटे को बुलाया। ''चलो, अब चलें''! फिर से नीलसंठ ने निवेदन किया– ''बस पाँच मिनट और, पिताजी, पांच और मिनट।'' व्यक्ति मुस्कराया और कहा, ''ठीक है''। वह महिला बाप–बेटे की बातें सुन रही थी। ''आप काफी सहनशील है।'' महिला ने कहा।

वह आदमी मुस्कराया और फिर उसने जवाब में कहा, ''मेरा बड़ा बेटा ''जीवन'', पिछले साल एक शराबी ड्राइवर की गाड़ी के नीचे आकर चल बसा था। मैं अपने बड़े बेटे ''जीवन'' के साथ कभी ज्यादा समय नहीं बिता पाया और अब मैं अपने छोटे बेटे के लिए 'सिर्फ पांच मिनट' के बदले कुछ भी दे सकता हूं। मैंने जीवन के साथ हुई उस गलती को कभी न दोहराने की कसम खाई है। वह सोचता है कि उसके पास कसरत करने के लिए पांच और मिनट है। सच तो यह है कि मुझे उसे खेलते हुए देखने के लिए पांच और मिनट का समय मिल जाता है जो मेरे लिए खुशी की बात है।'' जीवन कोई दौड़ नहीं है। जीवन प्राथमिकताओं को तय करते हुए उन पर चलने का नाम है। भले ही आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, ऐसे व्यक्ति जो आपके लिए प्रिय हैं, अपने व्यस्ततम समय में से उसके लिए ''पाँच और मिनट'' का समय देना सार्थक होगा अन्यथा, आपको ज़िंदगी भर के लिए पछताना पड़ सकता है। क्योंकि, एक बार आपने इसे खो दिया, तो यह हमेशा के लिए खो जाएगा ...!

आलेख

रीना कुमारी
अधिकारी
अंचल कार्यालय
राँची

वैश्विक परिवर्तन में विज्ञान की भूमिका

विज्ञान का अर्थ है विशेष ज्ञान। मनुष्य ने अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं दैनिक आवश्यक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए समय–समय पर नए आविष्कार किए हैं और इसी का परिणाम है कि विज्ञान आज वरदान के रूप में अपनी महत्ता स्थापित कर चुका है।

मनोरंजन, यातायात, चिकित्सा–शास्त्र जैसे क्षेत्र के लिए विज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण है। मनुष्य की दिनचर्या में प्रयोग होनेवाली वस्तुएं जैसे – कपड़ा, दियासलाई, कागज़, पेंसिल, बिजली के सामान, चूल्हे, प्रकाश, इत्यादि विज्ञान की ही देन हैं। विज्ञान की अनगिनत आविष्कारों के कारण मनुष्य का जीवन पहले की तुलना में अधिक आरामदायक हो गया है। विज्ञान की सहायता से असंभव कार्य भी आज संभव हो गया है। जिन वस्तुओं/ व्यवस्थाओं की हम सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते थे, आज वो पूरा होते दिख रहा है।

आधुनिक युग को हम विज्ञान का युग के नाम से भी संबोधित कर सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र में टेलीविजन, रेडियो, वीडियो इत्यादि उपलब्ध हैं। विज्ञान की वजह से दो स्थानों की दूरियां रेलगाड़ी, वायुयान, जेट विमान की वजह से कम हुई हैं। दूरभाष की सहायता से दुनिया में किसी भी कोने में एक–दूसरे को देखते हुए बातें कर सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि कंप्यूटर, सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक आविष्कारों में से एक है। कंप्यूटर की सहायता से हम कम से कम समय में अधिक कार्य कर सकते हैं। हम अपने बैंकिंग क्षेत्र में कंप्यूटर की सहायता के फलस्वरूप, प्रतिदिन का कार्य कुशलतापूर्वक कम समय में और डेटा को दीर्घ समयावधि तक के लिए संचय (स्टोर) कर पा रहे हैं। उपभोक्ताओं की बदलती ज़रूरतों और व्यवहार के कारण बैंकिंग क्षेत्र में भी काफी बदलाव आया है। परंपरागत बैंकिंग का स्थान कैशलेस बैंकिंग ने ले लिया है। इस कैशलेस व्यवस्था में विज्ञान का काफी योगदान है। विज्ञान के कारण ही मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम, भीम यूपीआई, इत्यादि का निर्माण हुआ है। इसके माध्यम से बैंकिंग सुविधा आमजन के लिए 24 घंटे के लिए उपलब्ध हो गया है। ग्राहकों की मांग और विज्ञान के योगदान के कारण कैशलेस अर्थव्यवस्था संभव हो पाया है। ग्रामीण/दुर्गम क्षेत्रों में जहाँ पहुंचना काफी कठिन है, वहाँ भी आज कारोबार प्रदाताओं (बिज़नेस करेस्पोंडेंट्स) के द्वारा आधार युक्त सहायक मशीन के माध्यम से बैंकिंग सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

विज्ञान ने चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में अद्भुत कार्य किया है, उदाहरण के लिए कैंसर, टीबी, हैजा जैसी असाध्य बीमारियों के उपचार को सुलभ बनाया है। वर्ष 2020 में कोविड–19 जैसी महामारी से निपटने के लिए विज्ञान की सहायता से वैक्सीन लाई गई है। हालांकि कोविड–19 वैक्सीन का परिणाम अभी पूर्ण रूप से आंका नहीं गया है क्योंकि वैक्सीन अभी अपने आरंभिक चरण में है। हम यह कह सकते हैं कि ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ विज्ञान की

सहायता नहीं ली गई है। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार विज्ञान के भी दो रूप हैं – लाभकारी और विनाशकारी। विज्ञान ने अणु बम, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, रासायनिक एवं जैविक हथियार आदि जैसे विनाशकारी विस्फोटक वस्तुएं भी मानव को प्रदान की हैं, जिनके प्रयोग के द्वारा पृथ्वी को क्षण भर में नष्ट किया जा सकता है। विज्ञान मनुष्य के द्वारा उसकी उपयोगिता पर अवलम्बित है।

मानव इतिहास में साल 2020 कोरोना महामारी के लिए याद रखा जाएगा। लेकिन इस साल बहुत सारी वैज्ञानिक खोजें हुईं और साथ ही आविष्कार भी हुए जिसके कारण विज्ञान की दुनिया के लिए साल 2020 बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। यह वर्ष अंतरिक्ष अनुसंधान, कोरोना वैक्सीन की खोज जैसी उपलब्धियों के लिए खास तौर पर जाना जाएगा।

वर्ष 2020 में हासिल विज्ञान की महत्वपूर्ण उपलब्धियां निम्नवत् हैं–

1. दुनिया का सबसे छोटा मेमोरी डिवाइज़ के कारण कंज़्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स और ब्रेन इंस्पायर्ड कंप्यूटिंग के लिए तेज, छोटे और अधिक ऊर्जा–कुशल इलेक्ट्रॉनिक चिप का निर्माण हो सकता है। वैज्ञानिकों ने उस पदार्थ विज्ञान को भी खोज लिया है जो इन छोटे उपकरणों के लिए गहन मेमोरी स्टोरेज क्षमताओं को रेखांकित करता है।
2. सौरमंडल के बाहर से पहली बार मिले रेडियो संकेत।
3. बीएसएनएल ने सैटलाइट आधारित सेवा का शुभारंभ किया जिसके फलस्वरूप समुद्र में भी नेटवर्क मिलना संभव हो गया है।
4. चीन के द्वारा दुनिया का प्रथम 6जी उपग्रह लॉन्च किया गया।
5. नासा के द्वारा चंद्रमा की सतह पर पानी की खोज, इंसानी बस्तियों को बसाने में मिलेगी सहायता।
6. यूएई के द्वारा पहला मंगल मिशन 'होप' लॉन्च किया गया।
7. इसरो द्वारा देश के शक्तिशाली संचार उपग्रह जीसेट 30 लॉन्च किया गया।
8. फाइज़र, मॉडेर्ना, ऑक्सफोर्ड, कोवैक्सीन, कोविशील्ड आदि वैक्सीन कोरोना के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करेगी।
9. अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा की अंतरिक्ष यात्री क्रिस्टीना कोच ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर लगभग 11 महीने तक समय व्यतीत कर एक महिला द्वारा सबसे लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने का रिकार्ड बनाया।
10. भारत द्वारा के–4 परमाणु बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया।

अत: हम कह सकते हैं कि इंसानी ज़रूरतों में आमूलचूल परिवर्तन लाते हुए विज्ञान ने मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, बैंकिंग, राजनैतिक एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति की है। विज्ञान आज विश्व के सामरिक विकास में कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

''हमारे निर्माता–भगवान ने हमें मस्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियां और क्षमताएं दी हैं। ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती है''।

– भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

आलेख

ओमप्रकाश एन.एस.
वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा)
प्रधान कार्यालय
बेंगलूरु

व्यक्तित्व विकास

'व्यक्तित्व' यानी 'पर्सनलिटी' ('personality') शब्द लैटिन शब्द 'पर्सोना' ('persona') से आया है। व्यक्तित्व विकास अपनी क्षमताओं का निर्माण करने, प्रतिभा का पोषण करने, नए–नए कौशलों को विकसित करने और अपनी कमज़ोरियों को पहचान कर उन्हें ताकत में बदलने के बारे में है। व्यक्तित्व विकास विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का अपेक्षाकृत स्थायी स्वरूप है जो व्यक्तियों को एक दूसरे से अलग करता है। व्यक्तित्व मनोविज्ञान में प्रमुख दृष्टिकोण यह इंगित करता है कि व्यक्तित्व, व्यक्ति के जीवन के शुरुआती दौर में ही उभरता है और जीवन भर विकसित होता रहता है। जब व्यक्तित्व विकास की बात आती है तो कड़ी मेहनत ही एकमात्र विकल्प है, जिससे सर्वांगीन विकास संभव है। जितनी जल्दी व्यक्ति इस बात को समझेगा, उसके लिए उतना ही बेहतर होगा। अत: व्यक्तित्व विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

व्यक्तित्व विकास एक अंतर्दृष्टि :

अन्य व्यक्ति के साथ व्यक्ति की प्रतिक्रिया जिस प्रकार की होती है और जिस प्रकार उनसे विचारों का आदान–प्रदान होता है, वही व्यक्तित्व कहलाता है। वास्तव में व्यक्तित्व के बारे में कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में वे सारे अनूठे तत्व शामिल हैं यानी वे विशेषताएं जो उसे जनसमूह में अन्य की तुलना में भिन्न स्थापित करती हैं। कुल मिलाकर व्यक्तित्व, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक लक्षणों, विशेषताओं, उद्धेश्यों, आदतों, धारणाओं व दृष्टिकोण का समावेश है। व्यक्तित्व के पांच प्राथमिक घटक हैं– बहिर्मुखता, सहमतता, भावनात्मक स्थिरता, कर्तव्यनिष्ठा और अनुभव के लिए खुलापन।

व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व :

अनुवांशिकता :

अनुवांशिकता उन कारकों से संबंधित है जो गर्भावस्था के दौरान तय होती है। वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है। यानी भौतिक संरचना, चेहरे की आकर्षनीयता, स्वभाव, ऊर्जा का स्तर इत्यादि। ये जैविक विशेषताएं हैं जो इन बातों से पूर्ण या पर्याप्त रूप से प्रभावित हैं कि आपके माता–पिता कौन थे, यानी ये उनके जैविक, शारीरिक व अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक बनावट पर आधारित हैं।

परिवेश :

हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में जिन परिवेशी तत्वों का दबाव होता है वे हैं संस्कृति जहां हमारा परवरिश हुआ, हमारी प्रारंभिक देखरेख, हमारे परिवार में निहित आदर्श, दोस्तों व सामाजिक समूह और अन्य से होनेवाले प्रभाव जिन्हें हम अनुभव करते हैं। परिवेश हमें अपनी जन्मजात शक्तियों की सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। जिस मौहाल में हम रहते हैं, हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी बहुत बड़ी भूमिका रहती है। व्यक्तित्व विकास के लिए सोशल

नेटवर्क आवश्यक है। भरोसेमंद लोगों का एक नेटवर्क बनाएं जो आप पर भरोसा करते हैं, आपको प्रेरित करते हैं, आपकी तरक्की की राह पर आपके साथ हैं। नए लोगों से मिलना भी कई मायने में मददगार साबित होता है। यह आपकी परिधि को व्यापक बनाता है। आपको कई गतिशील व्यक्तित्व के अच्छे गुणों पर लिहाज़ करने के साथ–साथ भिन्न प्रकार के व्यवहार से परिचित होने और बातचीत करने के विभिन्न तरीकों को सीखने का मौका मिलता है।

परिस्थिति :

तीसरा कारक, परिस्थति है जिससे हमारे व्यक्तित्व पर अनुवांशिकता और परिवेश के प्रभाव का असर होता है। यद्यपि व्यक्तित्व सामान्य तौर पर स्थिर और सुसंगत होता है, तथापि, भिन्न परिस्थितियों में उसमें बदलाव अवश्य आता है। अलग–अलग परिस्थितियों की मांग के अनुरूप व्यक्तित्व के भिन्न–भिन्न पक्ष उजागर होते हैं। अत: हमें बदलाव की स्थिति में व्यक्तित्व के प्रतिमानों पर गौर नहीं करना चाहिए।

स्व–जागरूकता :

स्व–जागरूकता के तहत आपकी मंशा, पसंद, व्यक्तित्व और समझ की जानकारी होती है जहां ऐसे कारक, किस तरह आपके न्याय, निर्णय और अन्य लोगों के साथ आपसी बातचीत को प्रभावित करते हैं। स्व–जागरूकता के ज़रिए व्यक्ति ''यह जानने की क्षमता का विकास करता है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं और क्यों और आपके बर्ताव पर आपकी भावनाओं का क्या प्रभाव है।'' लेकिन इसमें आंतरिक भावनाओं और विचारों, रुचियों, शक्तियों और सीमाओं, मूल्यों, कौशल, लक्ष्यों, क्षमताओं, नेतृत्व उन्मुखीकरण और पसंदीदा संप्रेषण–शैली, इत्यादि कुछ ऐसे तत्व हैं जिन पर नियंत्रण रखने की क्षमता शामिल हैं जो स्व–जागरूकता में निहित हैं। स्व–जागरूकता के ज़रिए आपकी अभिप्रेरणाओं, वरीयताओं, व्यक्तित्व और समझ के बारे में जानकारी मिलती है कि ये कारक आपके निर्णय, फैसले और अन्य लोगों के साथ होनेवाली बातचीत को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

सकारात्मक व्यक्तित्व के निर्माण की विशेषताएं :

1. ज़िम्मेदारी स्वीकार करना और एक अच्छा श्रोता बनना:

समाज, बुरे लोगों के क्रियाकलापों से नष्ट नहीं होता बल्कि अच्छे लोगों की निष्क्रियता से होता है। विन्सटन चर्चिल के कथन

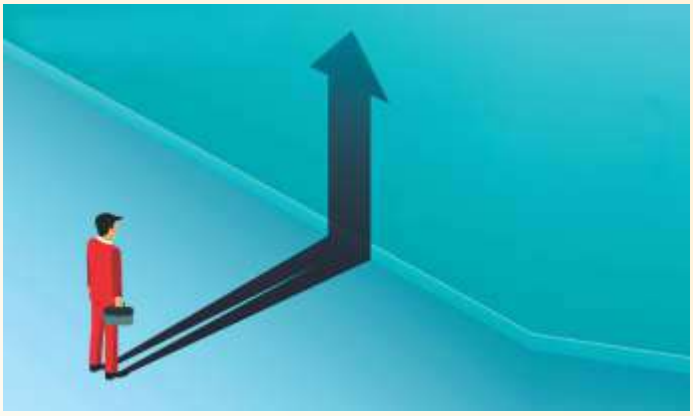

के अनुसार ''महानता का मूल्य ज़िम्मेदारी है।'' यह माना जाता है कि प्रभावी संप्रेषण 50% सुनना, 25% बोलना, 15% पढ़ना और 10% लिखना है। अत:, यह सर्वसम्मत बात है कि जब हम ध्यान से सुनते हैं तो 50% संप्रेषण कर लिये जाने के बराबर है।

2. सब का लिहाज़ करना और हास्य प्रवृत्ति विकसित करना :

सब पर ध्यान दें, शिष्टाचार व विनम्रता का पालन करें और सब की परवाह करें। महत्वपूर्ण बने रहने की इच्छा अधिकांश मनुष्यों में सबसे बड़ी इच्छाओं में से एक है और यह एक महान अभिप्रेरक हो सकता है। ईमानदार और सच्ची प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को महत्वपूर्ण महसूस करेगा और उसमें इन सकारात्मक गुणों की वृद्धि होगी। हास्य प्रवृत्ति बनाये रखें जिसके फलस्वरूप आप स्वयं पर हंसने में समर्थ हो पायेंगे। हास्य प्रवृत्ति एक व्यक्ति को दूसरों के द्वारा पसंद करने योग्य और आकर्षक बनाती है। दूसरों के प्रति सहानुभूति दर्शाएं क्योंकि सहानुभूति ही सकारात्मक व्यक्तित्व की एकमात्र महत्वपूर्ण विशेषता है।

3. सकारात्मक, प्रसन्नचित्त और उत्साही बने रहना :

आशावादी होना सकारात्मकता का ही हिस्सा है। इससे आपको अवसरों की पहचान करने और उनके प्रति काम करने में मदद मिलेगी। जब चुनौतियों और असफलताओं का सामना होता है, तब आशावादी लोग इसका समाधान खोजने की दिशा में जुट जाते हैं। अपने कार्य की योजना इस तरह बनाएं कि आप तो सफल होंगे ही और साथ ही साथ कोई सफलता से वंचित भी न हो। जिस प्रकार प्रसन्नता दो लोगों के बीच की सबसे छोटी दूरी है, उसी प्रकार, उत्साह के बिना कभी कुछ हासिल नहीं होता है। सभी पर विश्वास जताने के साथ–साथ इस बात को भी समझना ज़रूरी है कि विनम्रता के बिना

विश्वास, गर्व के समान होता है। ईमानदारीपूर्ण विनम्रता सभी गुणों की नींव है। यह महानता का संकेत है। समझ लिये जाने का सबसे अच्छा तरीका समझदार होना है।

4. अपने शब्दों को सावधानी से चुनना :

सिद्धांत यह है कि आपका बोलना चुप रहने से बेहतर होना चाहिए, बल्कि चुप रहना ज़्यादा सही होगा। कड़वाहट से बोले जाने वाले शब्द अपूरणीय क्षति का कारण बन सकते हैं। सभी परिस्थितियों में शिकायतें करना आदत की वजह से होती है। अत:, आलोचना और निंदा करने से बचना चाहिए क्योंकि ये वो ज़हर है जिनका प्रभाव वर्षों तक बना रहता है।

5. अन्य लोगों के व्यवहार पर सकारात्मक विवेचन करना :

हम दुनिया को वैसा नहीं देखते हैं जैसा कि वह है बल्कि उस प्रकार देखते हैं जिस प्रकार हम हैं। इसलिए जब हम अन्य लोगों के व्यवहार को नकारात्मक रूप से व्याख्या कर रहे होते हैं तो हम इस परिस्थिति में अपनी ही मानसिकता को दर्शाते हैं। इसके विपरीत जब सकारात्मक रूप से व्याख्या करते हैं तो संभव है कि अन्य लोग इसकी नकारात्मकता को महसूस कर सकें और इसे बदल सकें या संशोधित कर सकें।

6. ईमानदारी और निष्ठा की प्रशंसा करना :

महत्वपूर्ण बने रहने की इच्छा अधिकांश मनुष्य में सबसे बड़ी इच्छाओं में से एक है और यह एक महान अभिप्रेरक हो सकता है। ईमानदार और सच्ची प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को महत्वपूर्ण महसूस करेगा और उसमें इन सकारात्मक गुणों की वृद्धि होगी। हमेशा दूसरे के प्रयासों के लिए उसके प्रति शुक्रिया अदा करें, लेकिन उसकी ओर से प्रशंसा की अपेक्षा न करें। साथ ही दूसरों को नीचा दिखाने से बचें। झूठ की गति अधिक हो सकती है, लेकिन सच्चाई स्थिरता बनाये रखती है। झूठ की तुलना में सत्यनिष्ठा और ईमानदारी का अपेक्षाकृत अधिक चिरस्थायी प्रभाव रहता है।

7. गपशप से बचना और शिष्टाचार का पालन करना :

गपशप चरित्र की निंदा और बदनामी का कारण बन सकता है। जो लोग गपशप सुनते हैं वे गपशप करने वाले लोगों के ही समान दोषी हैं। एक अच्छा प्रयास करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें लगातार शिष्टाचार का पालन करने पर ज़ोर देना चाहिए। इसके साथ–साथ, यदि अपनी ओर से कोई गलती होती है तो उसे स्वीकार करें क्योंकि अपनी गलतियों से सीख पाकर उसे सुधारा जा सकता है।

8. अपने वादों को वचनबद्धता में परिवर्तित करना :

वचनबद्धता, सुख और दु:ख के दौर से गुज़रते हुए स्थायी संबंधों को स्थापित करती है। यह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व और संबंध में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचार होता है। कभी भी बहस न करें क्योंकि बहस करना हार जाने वाली लड़ाई लड़ने के बराबर है। यहां तक कि यदि तर्क से कोई जीतता भी है, तो भी उसका मूल्य जीतने के महत्व के मुकाबले कही अधिक महंगा साबित होता है।

व्यवहार :

व्यवहार, स्वयं द्वारा आचरण और कार्य करने का तरीका है। हमारा व्यवहार, हमारी भावनाओं, निर्णयों, विश्वासों, अभिप्रेरणाओं, आवश्यकताओं, अनुभवों और दूसरों की राय से प्रभावित होता है। व्यवहार का प्रतिमान, समय अंतराल में घटनाओं और कार्यों के प्रति हमारी प्रतिक्रियाओं के ज़रिए विकसित होता है। व्यवहार के आठ घटक होते हैं :

1. अभिप्रेरणा :

एक कार्य के स्थान पर दूसरे को अपनाने के लिए प्रेरित होना। हमारे मूल वाहकों, उन चीज़ों जिनसे आपको सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रेरणा मिलती है, से स्वयं अवगत होने से – आपके व्यवहार की जड़ों को समझने और आपके व्यवहार में बदलाव लाने के लिए यथा आवश्यक सुधार करने में मदद मिलती है।

2.सोचने और कार्य करने की प्रणाली :

सोचने की प्रणाली, आपके मस्तिष्क द्वारा प्राप्त निविष्टियों को संसाधित करने का तरीका है। हमारी सोच का सीधा असर हमारी कार्यक्षमता पर पड़ता है। जीवन में सकारात्मक अनुभूति के लिए सकारात्मक सोच बहुत ज़रूरी है। जिस प्रकार चीज़ों का ग्रहण करते हुए उस सूचना का प्रयोग करते हैं, उससे आपको निर्णय या फैसला लेने की दिशा में समझने में मदद मिलती है ताकि आप किसी एक व्यवहार या कार्य को किसी दूसरे व्यवहार या कार्य के स्थान पर चुन सकेंगे। नकारात्मक सोच जहाँ व्यक्ति को अंदर ही अंदर घोट देती है वहीं सकारात्मक सोच व्यक्ति को ऊर्जा प्रदान करती है। सकारात्मक सोच हमें हमेशा सही परिणाम देती है जबकि नकारात्मक सोच हमें तनाव की ओर ले जाती है। अत:, हर स्थिति में सकारात्मक सोच रखने की कोशिश करें। अपने व्यवहार को मिलनसार रखिये, कटु व्यवहार व खुद में खोये रहने वाले लोगों को कोई भी पसंद नहीं करेगा। जो व्यक्ति लोगों से मेलजोल रखता है व लोगों से दोस्ताना व्यवहार रखता है, उसी को लोग पसंद करते हैं। इसलिए स्वभाव में संजीदगी लाएँ व मिलनसार बनें।

3. परस्पर बातचीत की प्रणाली:

अन्य लोगों के साथ संवाद करने और विचारों, राय व भावनाओं को साझा करने का तरीका है। दूसरों के साथ बात करने और कार्य करने के संबंध में जानकार होने से जिन लोगों के साथ आप कार्य करते हैं उनके साथ आपकी पसंदीदा शैली को ढालने के बारे में समझने में आपको मदद मिल सकती है। हर कोई ऐसे लोगों से मिलना पसंद करता है जिसके व्यवहार में लचीलापन हो। उस पेड़ की तरह मत बनिए जो सीधा खड़ा रहता है बल्कि उस पेड़ की तरह बनिए जो लचीला होकर झुका रहता है।

4. स्व–निगरानी:

इसका अर्थ है सामाजिक परिस्थितियों की बदलती मांगों के अनुरूप हमारे व्यवहार को संवारने की प्रवृत्ति। अपने व्यक्तित्व पर निगरानी रखने की अवधारणा हमें उन गुणों जिन्हें हम सकारात्मक मानते हैं और जिन्हें हम बदलना चाहते हैं दोनों के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद मिलती है। स्व–निगरानी की भूमिका से अवगत होने के फलस्वरूप, हम अपने खुद के व्यवहार और दृष्टिकोण का मूल्यांकन कर सकते हैं। स्व–निगरानी करते समय, कुछेक स्वीकार्य मानकों के अनुरूप व्यक्तिगत मापदंडों को निर्धारित करना आवश्यक है। बाह्य संकेतों के प्रति उच्चतर स्व–निगरानी संबंधी तत्व अत्यधिक संवेदनशील है और इसमें स्वयं को किसी परिस्थिति या निर्धारित अपेक्षाओं के अनुरूप निरंतर रूप से ढालने की कोशिश होती है।

5. मनोवृत्ति :

मनोवृत्ति – किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल रूप से मूल्यांकनात्मक अभिव्यक्ति या प्रबुद्ध पूर्व–स्वभाव स्वरूप प्रतिक्रिया देने का तरीका है। मनोवृत्ति का स्वरूप संकीर्ण है। वह भिन्न परिस्थिति में भिन्न हो सकता है। मजबूत मनोवृत्ति से पेशेवर और व्यक्तिगत संबंधों दोनों पर असर पड़ता है। हमारी मनोवृत्ति यह निर्धारित कर सकती है कि क्या हम सकारात्मक रूप से सोचते हुए किसी स्थिति को नियंत्रण में लेते हैं या नकारात्मक रूप से सोचते हैं और किसी स्थिति को बदलने या प्रतिक्रिया देने में

असहाय महसूस करते हैं। हमारी मनोवृत्ति, हमारी क्षमता का अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है ताकि काम के सिलसिले में फलदायक सिद्ध हो सके। हमारी यही मनोवृत्ति हमारे चारों ओर लोगों को प्रभावित कर सकती है। हमारी मनोवृत्ति से हमारा व्यवहार तो प्रभावित होता ही है, बल्कि अन्य के साथ हमारी परस्पर बातचीत भी प्रभावित होती है। हमारे दोस्तों, परिवार के सदस्यों, सहकर्मियों और अन्य व्यक्ति निश्चित रूप से विभिन्न परिस्थितियों के प्रति हमारे विचारों और हमारी भावनाओं से प्रभावित होते हैं।

6. अनुभूति:

अनुभूति उस प्रक्रिया का वर्णन करती है जिसके द्वारा व्यक्ति संवेदनात्मक जानकारी एकत्र कर इसे परिभाषित करते हैं। जब हम किसी व्यक्ति या परिस्थिति का सामना करते हैं, तो हम विभिन्न निविष्टियों को आत्मसात् करने के लिए हमारी इंद्रियों का उपयोग करते हैं। इसके बाद, हमारा मस्तिष्क इन निविष्टियों को संसाधित और संयोजित करने के लिए संचित जानकारी से कई पहलुओं का चयन करता है। अंत में हमारा मस्तिष्क किसी व्यक्ति या परिस्थिति की व्याख्या और मूल्यांकन करता है। व्यक्तिगत अनुभूति हमेशा वास्तविकता के अनुरूप नहीं होती है बल्कि यह केवल समझनेवाले व्यक्ति की वास्तविकता का विवेचन होता है। हमारी अनुभूतियां कई कारकों से प्रभावित होती हैं अर्थात् – हमारी संस्कृति, परिवेश, अनुवांशिकता, मीडिया, हमारे मित्र, विगत अनुभव, बुद्धिमत्ता, ज़रूरतें, भावनाएं, मनोवृत्तियां और मूल्य।

अनुभूति, कई कारणों का परिणाम हो सकती है। मनुष्य के रूप में हम अपने पूर्वाग्रह के आधार पर अनुभूति का अनुभव करते हैं। अगर हम अपने पूर्वाग्रह से अवगत नहीं हैं और दूसरे के साथ हम अपनी समझ को परख नहीं लेते हैं तो हम विकृत अनुभूतियों पर निर्भर करते हुए महत्वपूर्ण जानकारी और परिस्थितियों से वंचित रह जायेंगे। अन्य के नज़रिये से स्वयं को देखने के ज़रिए हम अपनी ताकतों के बारे में जान सकते हैं और उन क्षेत्रों के बारे में भी जान सकते हैं जिनके संबंध में हम स्वयं को सुधार सकते हैं।

7. संप्रेषण:

संप्रेषण एक स्थान से दूसरे स्थान पर जानकारी अंतरित करने का कार्य है। रिश्ते बनाने के लिए व्यवसायिक और घर दोनों स्तर पर संप्रेषण अत्यावश्यक है। अच्छे संप्रेषण कौशल से जीवन भर आपको मदद मिल सकेगी। हमारे कार्यस्थल में सफल होने के लिए आवश्यक मौलिक कौशल की सूची में संप्रेषण कौशल का स्थान सबसे ऊपर है। महान नेताओं के बारे में एक विशेषता यह है कि उनमें प्रभावी रूप से संप्रेषण करने की क्षमता होती है जो इस बात को स्पष्ट दर्शाता है कि संप्रेषण कौशल कितना महत्वपूर्ण है। एक पुरानी कहावत है, ''पढ़ने से एक पूर्ण व्यक्ति बनता है, लिखने के ज़रिए एक सटीक व्यक्ति बनता है और विचार–विमर्श से एक सुसज्जित व्यक्ति का निर्माण होता है'' – एक कुशल संप्रेषणकर्ता बनने के लिए इसका अभ्यास आवश्यक है।

8. नैतिकता:

'नैतिकता' शब्द से हमारा तात्पर्य है नैतिक दर्शन के प्रमुख कारक – क्रियाओं, उद्धेश्यों के सही होने या गलत होने की भावना और इन कार्यों के परिणाम। संक्षेप में यह एक तत्व है जो नैतिक कर्तव्य के बारे में अच्छा या बुरा, उचित या अनुचित, सही या गलत प्रथाओं की पहचान करता है। यह बेहतर रूप से आधारित मानक है जिन्हें व्यक्ति को अधिकारों, दायित्वों, निष्पक्षता, समाज के हित आदि के संबंध में अपनाना चाहिए। नैतिकता किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक अहम हिस्सा है।

निष्कर्ष :

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व विशिष्ट होता है और अपने आप में अनूठा होता है। जो ख़ास गुण आपके पास है वह किसी अन्य व्यक्ति के पास नहीं होंगे। खुद का व्यक्तित्व विकास कर आप अपना जीवन संवार सकते हैं। हमारी सोच हमारे व्यक्तित्व पर गहरा असर छोड़ती है। सफलता हासिल करने में हमारा व्यक्तित्व बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमें व्यक्तित्व विकास के संबंध में स्वामी विवेकानन्द का एक महान विचार अपने जीवन में चरितार्थ करने की ज़रूरत है जो इस प्रकार है अर्थात् ''हम वही हैं जो हमारे विचारों ने हमें बनाया है; इसलिए, इस बारे में ध्यान रखें कि आप क्या सोचते हैं; शब्द गौण हैं जबकि विचार हमेशा ज़िन्दा रहते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं।''

''जब यह तय हो जाए कि आप अपने
लक्ष्य तक पहुंच नहीं पाएंगे तो भूलकर
भी लक्ष्य मत बदलिए, बल्कि लक्ष्य तक
पहुंचने का तरीका बदल डालिए।''

– कन्फ्यूसियस

यात्रावृत्तांत

प्रकाश माली
प्रबंधक(राजभाषा)
अंचल कार्यालय
चंडीगढ़

छत्तीसगढ़ के खजुराहो : भोरमदेव की यात्रा

मनुष्य जन्मजात ही सौंदर्य और प्रेम का उपासक होता है, फिर चाहे वह सौंदर्य नैसर्गिक हो या सांसर्गिक। वर्ष 2014 से 2016 तक मैं इंदौर अंचल कार्यालय में पदस्थ रहा। परंतु वर्ष 2016 में ही उसे अंचल कार्यालय से पदावनत कर क्षेत्रीय कार्यालय का दर्जा दे दिया गया और वहाँ से राजभाषा अधिकारी की पदस्थापना भी हटा दी गई। फलस्वरूप, मुझे अन्यत्र स्थानांतरित किया जाना ही था। मैं सोच रहा था कि मुझे समीप ही भोपाल अंचल कार्यालय में तैनाती मिल जाएगी। परंतु एक दिन अचानक प्रधान कार्यालय से एक संक्षिप्त कॉल आता है और कहा जाता है कि ''स्टेट कैपिटल (एक राज्य की राजधानी) होने के नाते क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) में राजभाषा अधिकारी का पद सृजन हुआ है और आपको वहाँ ट्रांसफर किया जाता है।'' मैं कुछ प्रतिक्रिया दे पाता, इससे पहले ही फोन कट जाता है और मेरे दिमाग में छत्तीसगढ़ की नक्सली छवि भयावह रूप लेने लगती है। शाखा दौरा राजभाषा अधिकारियों के केआरए का एक अभिन्न अंग है। शाखा दौरा का ख्याल आते ही मेरे ज़हन में भय व्याप्त होता जा रहा था। लेकिन एक कहावत है ना– कि 'जो मन का हो तो अच्छा और जो मन का न हो तो और भी अच्छा'।

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर में मेरे एक मित्र श्री राकेश जी भी कार्यरत थे, जो रायपुर के पास के ही किसी एक गांव से थे। उन्होंने मुझे बताया कि रायपुर अच्छी जगह है, आप जाइये, आपको कोई दिक्कत नहीं होगी। उनके शब्दों से मेरे भीतर कुछ आत्मविश्वास पैदा हुआ और अंततः मैंने रायपुर जाने का निश्चय किया। अगस्त 2016 में रायपुर पहुंचकर मैंने अपना कार्यभार संभाला और डरते–डरते केआरए के अनुसार शाखा दौरे भी आरम्भ किये। एक सहकर्मी ने सलाह दी कि छत्तीसगढ़ में शाखा दौरा के दौरान अपनी वेशभूषा साधारण रखना, और आम लोगों के जैसा दिखने का प्रयास करना, जो मेरे बस की बात नहीं थी। ख़ैर, मैंने नक्सल प्रभावित नारायणपुर की शाखा का भी दौरा किया। कोंडागांव से जंगल के रास्ते बस द्वारा नारायणपुर जाते समय मैंने देखा कि बस में सभी यात्री भयाक्रांत, शांत और सहमे हुए से बैठे थे। कोंडागांव से निकला ही था कि मोबाइल में आइडिया और एयरटेल के दोनों सिग्नल आने बंद हो गए। इससे भय और भी बढ़ता जा रहा था। गनीमत रही कि शाखा नारायणपुर बस स्टैंड के पास ही थी, इसलिए शाखा ढूंढ़ने में कोई दिक्कत नहीं हुई। शाखा के साथियों से मिलकर बेहद अच्छा लगा। मोबाइल नेटवर्क चले जाने के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि यहां केवल बीएसएनएल काम करता है और नक्सली ऑपरेशंस के चलते उसकी सेवाएं भी प्रायः बंद ही रहती हैं। बाह्य भय के बावजूद मुझे नारायणपुर की प्राकृतिक शांति और नैसर्गिक परिवेश ने बेहद प्रभावित किया।

शाखा दौरा के सिलसिले में ही मुझे कबीरधाम (कवर्धा) शाखा का दौरा करने का भी अवसर मिला। मैं रायपुर से बस द्वारा मुंगेली होते हुए जुलाई–2017 में कवर्धा शाखा पहुंच गया। शाखा–दौरा संपन्न करने के बाद मैं वापस रायपुर आने की सोच रहा था कि शाखा प्रबंधक महोदय ने कहा कि सर पास में ही भोरमदेव का प्रसिद्ध मंदिर है, आप उसे देखने ज़रूर जाइये। पता नहीं, फिर कभी आपका

यहां आना हो या न हो। अगले दिन छुट्टी थी, इसलिए मैंने भी उनके सुझाव को उचित मानते हुए स्वीकार कर लिया। अगले दिन भोरमदेव मंदिर देखने का निर्णय कर लिया। शाखा प्रमुख महोदय ने अंशकालिक कर्मचारी श्री राजेश जी से मुझे भोरमदेव मंदिर दिखा लाने का आग्रह किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इतिहास का विद्यार्थी होने के कारण मुझे इस बात की थोड़ी जानकारी अवश्य थी कि भोरमदेव को 'छतीसगढ़ का खजुराहो' कहा जाता है। इस तथ्य ने मेरी जिज्ञासा को और बढ़ा दिया था। राजेश जी, जो 26–27 साल का नवयुवक था, वह शाखा का एक अंशकालिक कर्मचारी था, लेकिन अपने काम के प्रति उसका समर्पण लाजबाव था। खैर! हमने अगले दिन मोटरसाइकिल से यात्रा आरम्भ की।

जुलाई का महीना था, यानी कि श्रावण मास चल रहा था। रास्ते में बारिश की फुहारें इतनी सुकोमलता से हमारे शरीर पर गिर रही थी, मानो प्रकृति भोरमदेव की यात्रा के दौरान रास्ते में फूलों से हमारा स्वागत कर रही हो। छत्तीसगढ़ नदी, नालों, पठारों और छोटे–छोटे पहाड़ों का प्रदेश है। चारों ओर के परिवेश की प्राकृतिक सुषमा को निहारकर मेरा मन–मयूर मुदित हो रहा था। अब बारिश थोड़ी बढ़ गई थी। रास्ते में पड़ने वाले सरोधा डैम तक पहुंचते–पहुँचते हम दोनों लगभग आधे भीग चुके थे। रिमझिम बारिश के बीच ही हमने प्राकृतिक–सौंदर्य शाश्वत प्रतीक सरोधा डैम(बाँध) को देखा जिसे दो समानांतर पर्वतों को एनीकट के माध्यम से जोड़कर बनाया गया है। बाँध को मछली पालन और पर्यटन–केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। वहाँ से हम पहाड़ों के साथ–साथ भोरमदेव मंदिर की ओर बढ़ ही रहे थे कि पहाड़ की एक घाटी पर झूमते, घाटी के साथ अठखेलियाँ करते बादलों के नयनाभिराम–दृश्य ने हमें रुकने पर मजबूर कर दिया। हमने अपने मोबाइल के कैमरे से उन मनोहारी दृश्यों के साथ कुछ फोटो क्लिक किये और कुछ देर उस नैसर्गिक सौन्दर्य को निहारकर अपने नयनों को सुकून देते हुए आगे बढ़े। हम सड़क पर चल ही रहे थे कि हमें सामने 100 मीटर दूर सड़क के नीचे से निकलता हुआ एक नाला दिखाई दे रहा था। हम उस तक पहुंचने वाले ही थे कि थोड़ी देर पहले हुई बारिश के बाद, पहाड़ों से बहकर आने वाले पानी से उसमें अचानक इतना भयंकर सैलाब आया कि हम उसे पार न कर सके और हमें रास्ता बदलना पड़ा। चूँकि, राजेश जी स्थानीय युवक था, इसलिए उसे वैकल्पिक मार्ग का पता था। हम आदिवासियों की कोल्हू से बनी की बस्ती से गुज़रते हुए अपनी मंज़िल तय कर रहे थे, लेकिन मेरा मन उस आदिवासी बस्ती में ही अटका हुआ था जहां का हर मंज़र दयनीयता की कहानी बयाँ कर रहा था। इसके बावजूद, उन आदिवासियों के चेहरों पर मौज़ूद मुस्कान, मानवीय जीजिविषा(जीने की इच्छा) का परिचय दे रही थी।

अंततः, हम भोरमदेव मंदिर परिसर में पहुँच ही गये। भोरमदेव भारत वर्ष के मध्य भाग के ख्याति प्राप्त महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिरों में से एक है। यह मंदिर कबीरधाम ज़िले में कवर्धा से 18 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में छपरी नामक गांव के पास अवस्थित है। रायपुर से इसकी दूरी 117 किलोमीटर तथा मध्य प्रदेश के जबलपुर नगर से 230 किलोमीटर है। यह सतपुड़ा पर्वत की सालेटेकरी की पहाड़ियों द्वारा निर्मित सुरंग में गोलाकार घाटी में सरोवर के किनारे सघन अरण्य में विद्यमान है। इस मंदिर का निर्माण 11वीं सदी ईस्वी में कलचुरी राजा पृथ्वीदेव प्रथम के समकालीन चवरापुर के फणीवंशीय छठे नामक गोपालदेव के राजकाल में हुआ था।

नागर–शैली में निर्मित यह मंदिर स्थापत्य कला का बेहतरीन उदाहरण है। प्रायः इसकी तुलना खजुराहो के मंदिरों से की जाती है और इसे 'छत्तीसगढ़ के खजुराहो' की उपमा दी जाती है। इस मंदिर की ऊंचाई धरातल से 30 मीटर यानी लगभग 100 फीट है। मंदिर की बाह्य भित्तियों पर अद्भुत प्रतिमाएं गज, अश्व, नर्तक–नर्तकियां, देवी–देवताओं यथा–चामुंडा, सरस्वती, गणेश, नटराज शिव आदि की प्रतिमाएं उकेरी गई हैं। इस मंदिर में तीन अर्द्ध मंडप युक्त महामंडप, अंतराल एवं गर्भगृह हैं। गर्भगृह का प्रवेश द्वार चमकदार काले पत्थर से निर्मित है, जो कलात्मक अभिकल्पों से अलंकृत है। 2.80 x 32.80 मीटर माप वाले वर्गाकार गर्भ–गृह में कृष्ण–प्रस्तर निर्मित शिवलिंग जिसे 'भोरमदेव शिव' के नाम से संबोधित करते हैं, स्थापित है। इस पूर्वाभिमुख मंदिर में 5.50 x 35.50 मीटर का वर्गाकार मंडप है। भोरमदेव मंदिर काफी हद तक कोणार्क के सूर्यमंदिर एवं खजुराहो के मंदिरों से समानता रखता है। संभवतः यही कारण है कि इसे 'छत्तीसगढ़ का खजुराहो' कहा जाता है। प्राकृतिक सौंदर्य–भूमि एवं इसके मंदिर–वास्तु को ध्यान में रखकर अलेक्जेंडर कनिंघम ने इसे उनके द्वारा देखे गए सर्वाधिक सुंदर मंदिरों में से एक माना है। अब इसके शिखर पर कलश नहीं है।

भोरमदेव मंदिर से लगभग एक किलोमीटर दक्षिण में एक और मंदिर है, जिसे 'मण्डवा महल' कहा जाता है। इस मंदिर का निर्माण स्थानीय चवरापुर के फणीनागवंशी राजा रामचंद्रदेव की पत्नी अम्बिकादेवी द्वारा 15वीं सदी में करवाया गया था। इस मंदिर की बाह्य दीवारों पर अद्भुत सुंदर मूर्तियों का अंकन हुआ है, जिसे देखकर अनायास ही खजुराहो के मंदिरों का स्मरण हो आता है। यह मंदिर, कला और सौंदर्य का एक जीता–जागता मिसाल है। संपूर्ण भोरमदेव मंदिर–परिसर का भ्रमण करने के बाद, हम मन में असीम शांति और नैसर्गिक सौंदर्य का सुकोष लेकर सहर्ष घर लौटे ।

केनरा बैंक राजभाषा अधिकारियों का 38वां अखिल भारतीय सम्मेलन

केनरा बैंक राजभाषा अधिकारियों का दो दिवसीय 38वां अखिल भारतीय सम्मेलन दिनांक 08 एवं 09 मार्च 2021 को वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से आयोजित किया गया। सम्मेलन में श्री एल.वी. प्रभाकर, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक, श्री एल.वी.आर. प्रसाद, मुख्य महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, श्री आर. गिरीस कुमार, महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, श्री शंकर एस., महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, श्री आलोक कुमार अग्रवाल, महा प्रबंधक, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का सचिवालय एवं श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग उपस्थित थे। बैंक में कार्यरत राजभाषा अधिकारी अपने–अपने कार्यस्थल से वीसी के माध्यम से जुड़े थे। सम्मेलन का शुभारम्भ श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग द्वारा लिखित केनरा गीत से हुआ।

तत्पश्चात्, श्री शंकर एस., महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने सभी का स्वागत किया और कहा कि सभी राजभाषा अधिकारी इस दो–दिवसीय सम्मेलन का लाभ उठाएं। श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने पिछले एक वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हुई प्रगति एवं उपलब्धियों पर अपनी प्रस्तुति दी और राजभाषा कार्यान्वयन को लेकर राजभाषा अधिकारियों को प्रधान कार्यालय की अपेक्षाओं से अवगत कराया।

इसके बाद, उपस्थित गणमान्य द्वारा ''लोकल के लिए वोकल बनें'' – स्थानीय लोगों के दिलों को जीतने के लिए स्थानीय भाषा सीखना एक कौशल है, नामक पोस्टर का विमोचन किया गया। राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय बेंगलूरू द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका ''केनरा ज्योति'' के 26वें अंक का विमोचन भी किया गया। श्री बिबिन वर्गीस, वरिष्ठ प्रबंधक एवं श्रीमती आर.वी. रेखा, एकल खिड़की परिचालक द्वारा हिंदी में पासशीट जेनरेट कर सीबीएस के राजभाषा संस्करण पर प्रस्तुति दी गई। कैंडल के माध्यम से राजभाषा अधिकारियों के लिए आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं के नामों की घोषणा की गई। केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना के पुरस्कार विजेताओं को शील्ड प्रदान किए गए।

श्री एल.वी. प्रभाकर, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने अपने संबोधन में शाखाओं में ग्राहकों के लिए प्रयोग किए जाने वाले फॉर्मों के द्विभाषी/त्रिभाषी रूप में उपलब्धता पर ज़ोर देते हुए कहा कि सभी राजभाषा अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि 'क' क्षेत्र की शाखाओं में ग्राहकों के लिए प्रयोग किए जाने वाले फॉर्म द्विभाषी (हिंदी–अंग्रेज़ी) और 'ग' क्षेत्र में त्रिभाषी (क्षेत्रीय–हिंदी–अंग्रेज़ी) रूप में उपलब्ध हो। साथ ही हिंदी में अधिक से अधिक पत्र व्यवहार करें एवं परिपत्रों का अनुवाद कार्य तुरंत पूरा कर द्विभाषी रूप में जारी किया जाए। आगे, उन्होंने कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारा बैंक अन्य बैंक की तुलना में अग्रणी बना रहे, इसके लिए विभिन्न तरह के क्रियाकलाप आयोजित करें।

श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक ने बैंकिंग कारोबार में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग व्यवसाय बढ़ाने में क्षेत्रीय भाषा की अहम भूमिका होती है। इसलिए वर्तमान कोविड–19 महामारी की परिस्थिति में तकनीक आधारित बैंकिंग व्यवस्था में डिजिटलीकरण में भी हिंदी के प्रयोग का सकारात्मक लाभ हमारे ग्राहकों को मिलना चाहिए। इसी क्रम में हमारे बैंक द्वारा प्रचार–प्रसार की सामग्रियों को क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ हिंदी में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति लायी जा सकती है। इसके अतिरिक्त, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में 'कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त करने के लिए आवश्यक सभी अपेक्षाओं का अनुपालन और समय पर रिपोर्टिंग सुनिश्चित किया जाए। इसके बाद, आठ अंचल कार्यालय और उनके अधीन क्षेत्रीय कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा अधिकारियों के कार्यनिष्पादन की समीक्षा की गई। अंत में, श्री बिबिन वर्गीस, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया।

सम्मेलन के दूसरे दिन प्रथम सत्र और द्वितीय सत्र में शेष सभी अंचल कार्यालयों और क्षेत्रीय कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा अधिकारियों के कार्यनिष्पादन की समीक्षा की गई। सभी राजभाषा अधिकारियों को अपने विचार प्रस्तुत करने का समान अवसर दिया गया। इसके बाद, अंचल कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में पदस्थ श्रीमती बी. सरस्वती, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) की सेवानिवृत्ति पर राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। अंचल कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के अंचल प्रमुख श्री नायर अजीत कृष्णन, महा प्रबंधक ने प्रधान कार्यालय, राजभाषा अनुभाग की ओर से उन्हें शॉल ओढ़ाकर एवं पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया। श्री शंकर एस., महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने बेहतर कार्यों के प्रति राजभाषा अधिकारियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि राजभाषा अधिकारी अपने कार्य के साथ– साथ सामान्य बैंकिंग में भी अपनी रुचि दिखाएं।

समापन समारोह में श्री एल.वी.आर. प्रसाद, मुख्य महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने राजभाषा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय साहित्य विश्व में सबसे समृद्ध साहित्य है। हमारे देश में कई भाषाएं हैं, किंतु हिंदी जानने वाले लोग सर्वाधिक हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार में मीडिया की भी अहम भूमिका रही है। अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी लोग हिंदी जानते और समझते हैं। उन्होंने कहा कि ''राजभाषा अधिकारी कार्यक्रमों का आयोजन करने में सक्रियता से भाग लेते हैं और विपरीत परिस्थितियों में भी बहुत ही सफलतापूर्वक कार्य करते हैं एवं सभी राजभाषा अधिकारी इसके लिए प्रशंसा के पात्र हैं।'' उन्होंने कहा कि राजभाषा अधिकारी आगे भी इसी तरह अपने क्रियाकलापों को जारी रखें। उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि जहां तक पदोन्नति का सवाल है, हमारे बैंक में राजभाषा अधिकारियों के लिए भी समान अवसर उपलब्ध हैं। अत: सभी समर्पण भाव से अपने कर्तव्य का पालन करें।

श्री एन.एस. ओमप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय ने राजभाषा अधिकारियों को 'केनरा ज्योति' और 'श्रेयस' पत्रिका में अधिक से अधिक प्रविष्टि भेजने हेतु प्रोत्साहित किया। श्री ओम प्रकाश साह, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग द्वारा समापन समारोह का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। श्रीमती शिवानी तिवारी, प्रबंधक द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन का संचालन किया गया।

आलेख

संतोष नायक
एकल खिड़की परिचालक
कचहरी रोड शाखा
रांची

क्योंकि जीवन चलती का नाम है

आशा और उम्मीद तो गतिशील जीवन का प्रमाण है।
दूसरों की खुशियों तले प्राप्त शोहरत तो झूठ का गुमान है।।

आकाश में स्वछंद विचरते पक्षी में भी उड़ान है।
आज दुनिया में सिर्फ झूठ और फरेब की त्राहिमाम है।।

आज चारों ओर इंसान पर इंसानियत की कत्ल का इल्ज़ाम है,
प्रकृति क्या मारेगी इंसान को जिसने खुद किया,
हो अपनी बर्बादी का इंतज़ाम है,
तभी तो जीवन गतिमान है,
क्योंकि जीवन चलती का नाम है।।

कहाँ गये हिन्द के रखवाले जिन पर राष्ट्र का मान है।
बाज़ारवाद के प्यादे, शालीनता और संस्कृति के तीर कमान हैं।।

प्रकृति से बड़ा सत्य हमारे लिए अज्ञान है।
फिर भी इससे लड़ने में हम अंतर्ध्यान हैं।।

कब मिटेगी इंसानी भूख की सीमा किसे संज्ञान है।
सब अज्ञानता की शिविर में सोते पूर्णत: विद्यमान हैं।।

यह तो जीवन का अपमान है।
क्योंकि जीवन चलती का नाम है।।

भूख लाचार और असहाय की फिक्र किसे,
सभी अपने में परेशान हैं,
यदि व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज,

और समाज से राष्ट्र का निर्माण है,
तो सबसे पहले व्यक्ति ही इस पृथ्वी रूपी,
संजीवनी का प्राण है।।

जो जीवन की जद्दोजहद में छूट चुका गुमनाम है,
वो सही मायने में खो चुका अपनी पहचान है,
यही तो आज जीवन का परिणाम है,
क्योंकि जीवन चलती का नाम है।।

मनुष्य अब सामाजिक प्राणी नहीं वरन् तब्दील श्मशान है।
जिसे अपने कुकर्म का नहीं सिर्फ ऐश्वर्य का अभिमान है।।

बेतहाशा बढ़ती अपेक्षा हमारे बौनेपन की पहचान है,
कुंद होते ये जल, जंगल, जीव हम पे कब तक मेहरबान है,
बहरहाल, हर निराशा में एक आशा का दीप विद्यमान है,
परिवर्तन ही है जो भूत, वर्तमान और भविष्य में भी एक समान है,

तभी तो जीवन ना रुका था, ना रुका है और ना रुकेगा।
क्योंकि जीवन चलती का नाम है।।

आलेख

भुवनेश कुमार उप्रेती
वरिष्ठ प्रबंधक
(सेवानिवृत्त)
केनरा बैंक

दूसरी माँ

जीवन में अनुशासन और समय से कार्य करने के बहुत फायदे होते हैं। पिताजी बचपन से ही मुझे समय से कार्य करने का उपदेश देते रहते थे और कहा करते थे 'जो समय को बर्बाद करता है, समय भी उसको बर्बाद कर देता है।' यही कहते थे – ''समय से कार्य को पूरा करो, अनुशासित रहो और समय का पालन करो।'' यही धारणा मेरे जीवन में घर कर गई। जब मैं बैंक में कार्य करने लगा तो मैं सभी को, चाहे ग्राहक हो या सहकर्मी, मैं समय–समय पर यही उपदेश देता रहता था।

वर्ष 2004 में मेरी पदोन्नति हो गई और प्रबंधक के पद पर गांव की एक शाखा में मेरा स्थानांतरण हो गया। मन ही मन मैंने विचार कर लिया था कि अब मैं शाखा में कड़ाई से सभी को अनुशासन का पालन करने को कहूंगा और जो पालन नहीं करेगा उससे सख्ती से पेश आऊंगा। जब मैंने शाखा ज्वाइन की तो मैंने यह महसूस किया कि समय का पालन ना तो कर्मचारी कर रहे थे और ना ही ग्राहक। मैंने स्टाफ–मीटिंग का आयोजन किया और सभी को निर्देश दिया कि समय का पालन करें, समय से शाखा का कार्य पूर्ण करें और ग्राहकों को भी समय का पालन करने को कहें।

मैंने जब ऐसा कहा, तो हमारी शाखा के कर्मचारी यादव जी कहने लगे सर हम सभी बैंक के समय का पालन करेंगे ही, लेकिन यह सख्ती ग्राहकों पर ना थोपिए। यह पहाड़ी एरिया है और लोग बहुत दूर से यहां पैदल चल कर आते हैं। यदि वे किसी कारणवश आने में कुछ लेट हो जाते हैं तो उनको ज़रूर अटेंड किया जाए क्योंकि यहां पर ट्रांसपोर्ट के साधन नहीं हैं और गांव में सड़कें भी नहीं हैं। मैंने उन्हें सुझाव दिया और कहा कि अपनी तरफ से ग्राहकों को बैंक की समय –सारणी से अवगत कराएं और जो भी कभी–कभार लेट हो जाएं तो उसका काम ज़रूर करें और जो अक्सर लेट आता है उसे टॉलरेट ना करें।

अभी कुछ ही दिन हुए थे कि 4:00 बजे के करीब एक बूढ़ी औरत बैंक के बाहर खड़ी थी और वह अंदर आने की कोशिश कर रही थी, तभी हमारी शाखा के कर्मचारी श्री यादव जी ने उस बूढ़ी औरत को अंदर बुला लिया। यह देख कर मुझे यादव जी पर मन ही मन गुस्सा भी आया कि कुछ दिन पहले ही मैंने कहा था कि समय का पालन करें और यह 4:00 बजे ग्राहकों को इंटरटेन कर रहे हैं। बूढ़ी औरत यादव जी से अपने खाते का बैलेंस पूछने लगी और यादव जी ने उसको खाते का बैलेंस बता दिया। अब वह यादव जी से अनुरोध कर रही थी कि उसके खाते से कुछ रकम निकलवा दें। यादव जी ने मुझसे कहा ''सर, यह ग्राहक खाते से रकम निकलवाना चाहती है। क्या आप इसकी इज़ाज़त देंगे, क्योंकि 4:00 बज चुके हैं।'' मैंने यादव जी से पूछा – ''क्या आपको बैंक की समय–सारणी की जानकारी नहीं है, जो आप मुझसे पूछ रहे हैं? इस ग्राहक को समय के बारे में बताओ और कहो कि आप लेट आई हैं, कल प्रात: 10:00 बजे आइए।'' ऐसा कहकर मैं अपने काम में लग गया।

थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि वह बूढ़ी औरत शाखा में ही एक कोने में बैठी हुई थी। मैंने उसको देख कर कहा कि ''आपको बता दिया है ना कि कल आना, क्या आपको सुनाई नहीं देता।'' यादव जी ने अनुरोध किया ''सर यह अम्मा दुखियारी है ज़रा इसकी बात सुन लीजिए''। मैंने उसको अपने पास बुलाया और पूछा ''कितनी रकम निकलवानी है।'' वह चुप रही और कोई जबाब नहीं दिया। एक बार फिर मैंने रोबीले अंदाज़ में पूछा, ''अम्मा कितनी रकम निकलवानी है एक हज़ार या दो हज़ार?'' वह अब बहुत ही सकुचाते हुए बोली ''साहब मेरे खाते से एक सौ रुपया निकलवा दो।'' मैंने यादव जी से पूछा इनके खाते में कितना बैलेंस है? यादव जी ने कहा ''केवल ₹100/–'' मैंने कहा सौ रुपया तो नहीं निकलेगा। इतनी रकम तो हमेशा खाते में होनी चाहिए, नहीं तो खाता बंद हो जाएगा। मैंने अम्मा को समझाया कि खाते में सौ रुपया रखना ज़रूरी है, नहीं तो आपका खाता बंद हो जाएगा। वह कहने लगी कोई बात नहीं साहब, बंद होता है तो होने दो, लेकिन सौ रुपया मुझे दे दो। मैंने उनकी पासबुक देखी तो उसमें केवल ₹100/– ही बैलेंस था। सौ रुपए की यह एक इकलौती इंट्री थी जोकि खाता खोलने के समय जमा कराई गई थी। मैं उसके खाते का निरीक्षण कर ही रहा था तभी उसने कहा, ''साहब पचास रुपया निकलवा दो। उससे भी कुछ दिन मेरा काम चल जाएगा।'' मैंने पूछा ''क्या करोगी पचास रुपए से''? वह बोली ''घर में पकाने को अब कुछ नहीं है । यदि पचास रूपए नहीं मिले, तो आज रात को भूखा ही सोना पड़ेगा।'' वह कहने लगी – ''साहब मैं सामने वाले लाला की दुकान से उधार राशन खरीदने आई थी। उसका सौ रुपया बकाया है जो मैंने दो महीने से नहीं चुकाया है, इसलिए उसने उधार में राशन देने से मना कर दिया है। यदि उसके सौ रुपए के उधार से पचास रुपया भी चुका दूंगी तो वह कुछ राशन मुझे उधार में अवश्य दे देगा। मैंने पूछा ''आपके परिवार में कितने सदस्य हैं?'' उसने कहा कि ''मेरे चार बेटे हैं, लेकिन सभी मानसिक रूप से बीमार हैं। एक बहू है जो घर का काम संभालती है और मैं दूसरों के खेतों में मज़दूरी करके अपने बच्चों को पाल रही हूँ। कभी पत्थर ढूंढ़ती हूं या खेत में काम करके गुज़ारा करती हूँ। अब उम्र काफी हो गई है और इस बूढ़े शरीर से ज़्यादा काम नहीं होता है। मुझे काम भी हमेशा नहीं मिलता है। काश! मेरा एक भी बेटा ठीक होता, तो इस उम्र में मेरी यह दशा नहीं होती।'' उस बूढ़ी औरत की बातें सुनकर मेरा दिल पसीज गया। अभी तक जिसको मैं बूढ़ी औरत कह रहा था, अनायास मुंह से निकला ''अम्मा, आप क्या चाहती हैं?'' अम्मा सुनते ही वह बोली ''बेटा,

यदि मेरे खाते से सौ रुपया निकलवा दो, तो तुम्हारी बहुत मेहरबानी होगी।''

मैं, मन ही मन सोचने लगा, इतनी मोटी रकम और बैंक द्वारा बहुत सारी सुविधाएं पाने के बाद भी, हम अपनी सैलरी को कम आंकते हैं और यह एक अम्मा है जो ना कुछ होते हुए भी, इस उम्र में भी अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ निभा रही हैं। मैंने अपनी जेब से एक सौ रुपए का नोट निकाला और अम्मा को दिया और कहा कि ''जितना घर के लिए राशन चाहिए, वह सामने वाले लाला की दुकान से खरीद ले।'' अम्मा सौ रुपया लेने में शरमा रही थी और कहने लगी, ''कैसे लौटाऊंगी आपका उधार।'' मैंने कहा – ''आपको उधार लौटाने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि मैंने आपको अम्मा कहा है और आपने भी मुझको अपना बेटा माना है और अब आप रकम लौटाने की चिंता न करें। अब हम दोनों के बीच मां और बेटे का रिश्ता है, जिसमें बेटा हमेशा माँ की ज़िंदगी भर ऋणी रहता है।'' वह बहुत सकुचाते हुए चली गई और मैंने उसको हर महीने राशन देने का भी आश्वासन दिया ।

अम्मा से मुलाकात वाले दिन मैं रात भर बेचैन रहा और सोचता रहा कि इस संसार में कितनी ऐसी अम्मा होंगी, जो इतनी तकलीफ में जीवन जी रही होंगी। रात कब गहरी नींद में सो गया पता नहीं चला और जब सुबह उठा तो मन हलका और प्रसन्न था। अम्मा से मिलने के बाद ऐसा लगा, जैसे कि मुझे मेरी माँ मिल गई हो, जो कुछ वर्ष पहले मुझे अकेला छोड़कर इस संसार से चली गई थी और जिसकी मुझे तभी से जीवन में कमी महसूस हो रही थी। अब मैं हर महीने अम्मा का इंतज़ार करता जैसे नन्हा–बच्चा अपनी मां का इंतज़ार करता है। जिस दिन वह बैंक में आती थी, उस दिन ऐसे लगता था जैसे कि मेरी माँ मुझसे बैंक में मिलने आई है ।

मैं उसको हर महीने सौ रुपए देता और जो भी उसको राशन चाहिए होता था, वह लाला की दुकान से दिलवा देता था। तीन वर्ष के कार्यकाल के बाद जब मेरे स्थानांतरण के बारे में अम्मा को पता चला तो वह बहुत मायूस हो गई। जिस दिन मेरा फेयरवेल था, उस दिन वह मेरी शाखा में आई और फूट–फूट कर रोने लगी और कहने लगी कि ''बेटा अब मेरा ख्याल कौन करेगा।'' मैंने उनको आश्वासन दिया और कहा कि जैसा अभी तक चल रहा है, वैसा आगे भी चलेगा। मैंने उनसे कहा,'' मेरी माँ अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन आपने मेरे जीवन में उसकी कमी पूरी कर दी है।''

मेरा दिल्ली स्थानांतरण होने के बाद भी मैं अम्मा का वैसा ही ख्याल करता था, जैसा मैं करता आ रहा था। दीवाली और होली के त्योहार के मौके पर कुछ ज़्यादा मदद करता, ताकि उनके घर में भी दीपावली का दीपक जले और होली के दिन उनके आंगन में भी होली के रंग बिखरे। दीवाली और होली के पर्व में अम्मा किसी गांव वाले से अनुरोध करके मुझसे मोबाइल पर बात कर लिया करती थी और शुभकामनाएं भी देती थी।

बहुत दिनों से मुझे अम्मा के बारे में कोई सूचना नहीं मिल रही थी। एक दिन मुझे अम्मा की बहू का फोन आया और उसने बताया कि अम्मा बहुत बीमार है और वह आपसे बात करना चाहती है। मैंने उससे बात की और हालचाल पूछा तो वह बोली – ''बेटा! बस मैं अब थोड़े ही दिन की मेहमान हूँ, साँस उखड़ती जा रही है, सोचा कि जाने से पहले तुमसे बात कर लूँ।'' मैंने आश्वासन दिया कि आप जल्दी ठीक हो जाओगी और उनकी बहू को मैंने कहा कि ''तुम अम्मा का इलाज करवाना और रुपये–पैसे की चिंता मत करना। वह मैं देख लूँगा।'' कुछ दिन बाद अम्मा की बहू का फोन आया कि अम्मा का निधन हो गया है और मरते–मरते भी आपको याद कर रही थी। यह समाचार सुनकर आंखें नम हो गईं और मुझे ऐसा लगा–जैसे मैंने अपनी दूसरी माँ को भी खो दिया।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5,11 व 12 : मुख्यांश
Rule 5, 11 & 12 of OL Rules 1976 : Salient features

राजभाषा अधिनियम 5 के अंतर्गत, हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिए।

As per Rule 5, all the letters/communications received in Hindi are to be replied in Hindi only.

राजभाषा अधिनियम 11 के अंतर्गत, सभी मैन्युअल, संहिताएं और असांविधिक प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के प्रारूप तथा शीर्षक, नाम पट्ट, साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष तथा लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन–सामग्री की अन्य मदें भी हिन्दी और अंग्रेज़ी (डिग्लॉट फॉर्म) में होंगी।

As per Rule 11, all the Manuals, codes and other non-statutory procedural literature, the forms and headings of registers, nameplates, sign boards, letter heads and inscriptions on envelopes and other items of stationery shall also be in Hindi and English (in diglot form).

राजभाषा अधिनियम 12 के अंतर्गत, कार्यालय/शाखा के प्रशासनिक प्रमुख का यह उत्तरदायित्व है कि वह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के प्रावधान तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

As per Rule 12, the responsibility lies with the Administrative Head of the Office/Branch, to ensure that the provisions of Official Language Act, Official Language Rules and directions issued thereunder are properly complied with and to devise suitable and effective check points for this purpose.

आलेख

गोविंद शंकर कुरुप
(03 जून 1901 – 2 फरवरी 1978)

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता : श्रृंखला

'ज्ञानपीठ पुरस्कार' विजेता श्रृंखला की इस द्वितीय कड़ी में हम, भारत में सर्वप्रथम 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त करने वाले मलयालम लेखक श्री गोविंद शंकर कुरुप की जीवनी का यहां संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

श्री गोविंद शंकर कुरुप (सन् 1901–1978), मलयालम साहित्य के भारतीय कवि, निबंधकार और साहित्यिक आलोचक हैं, जिन्हें सन् 1965 में ''ओडक्कुष़ल'' नामक अपनी कविता संग्रह के लिए सर्वप्रथम भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। उन्हें 'महाकवि जी' के नाम से भी जाना जाता है।

सन् 1965 में उनकी प्रसिद्ध रचना ''ओडक्कुष़ल' अर्थात् बाँसुरी, भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' द्वारा सम्मानित हुई। उनके द्वारा रचित एक कविता संग्रह 'विश्वदर्शनम्' के लिये सन् 1963 में उन्हें 'केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् 1961 में उन्हें 'केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार' और सन् 1967 में 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' भी प्राप्त हुए। उन्होंने सन् 1968 से 1972 तक राज्य सभा के मनोनीत सदस्य के रूप में कार्य किया। उन्हें सन् 1967 में तीसरा सर्वोच्च भारतीय नागरिक पुरस्कार 'पद्म भूषण' प्रदान किया गया। सन् 1978 में उनकी मृत्यु के अवसर पर केरल में राजकीय अवकाश की घोषणा की गई।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा :

श्री गोविन्द शंकर कुरुप का जन्म 3 जून, 1901 को केरल के एरणाकुलम ज़िले में नायत्तोड के सरलजीवी वातावरण में एन.वी. शंकर वारियर के घर में हुआ। उनकी माता का नाम लक्ष्मीकुट्टी अम्मा था। बचपन में ही पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका लालन–पालन मामा ने किया। उनके मामा ज्योतिषी और पंडित थे जिसके कारण संस्कृत पढ़ने में उनकी सहज रुचि रही और उन्हें संस्कृत काव्य परंपरा के सुदृढ़ संस्कार मिले। तीन साल की उम्र से उनकी शिक्षा आरंभ हुई। आठ वर्ष तक की आयु में वे 'अमर कोश', 'सिद्धरूपम', 'श्रीरामोदन्तम्' आदि ग्रन्थ कंठस्थ कर चुके थे और 'रघुवंश महाकाव्य' के कई श्लोक पढ़ चुके थे। ग्यारह वर्ष की आयु में महाकवि कुंजिकुट्टन के गाँव आगमन पर वे कविता की ओर उन्मुख हुए। आगे की पढ़ाई के लिए वे पेरुम्बावूर के माध्यमिक विद्यालय में गए। सातवीं कक्षा के बाद वे मूवाट्टुपुषा मलयालम महाविद्यालय में पढ़ने गए। यहाँ के दो अध्यापकों श्री आर.सी. शर्मा और श्री एस.एन. नायर का उनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने कोचीन राज्य की पंडित परीक्षा पास की और बांग्ला व मलयालम साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने 16 वर्ष की उम्र में कोट्टम कॉन्वेंट स्कूल के प्रधानाध्यापक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। वहाँ अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने मलयालम पंडित और विद्वान परीक्षाएँ पास करने के लिए अपनी पढ़ाई जारी रखी।

पारिवारिक जीवन :

गोविंद शंकर कुरुप का विवाह सन् 1931 में सुभद्रा अम्मा से हुआ और इस दंपति के दो बच्चे थे, बेटा–रवींद्रनाथ और बेटी–राधा। राधा का विवाह एक शिक्षाविद और प्रमुख साहित्यकार एम. अच्युतन से हुआ।

सन् 1927 में, उन्होंने तिरुविल्वामला हाई स्कूल में मलयालम पंडित के रूप में और सन् 1927 में तृश्शूर ट्रेनिंग स्कूल में शिक्षक के रूप में शिक्षा ग्रहण की।

पेशा :

सन् 1931 में, वह एक व्याख्याता(लेक्चरर) के रूप में महाराजा कॉलेज, एरणाकुलम में शामिल हुए और सन् 1956 में उसी महाविद्यालय से प्रोफेसर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उनकी पहली कविता 'आत्मपोषिणी' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई और जल्दी ही उनका पहला कविता संग्रह 'साहित्य कौतुकम' प्रकाशित हुआ। इस दौरान वे तिरुविल्वामला महाविद्यालय में अध्यापक हुए। तिरुविल्वामला में अध्यापन कार्य करते हुए अँग्रेज़ी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन किया। अँग्रेज़ी साहित्य इनको गीति के आलोक की ओर ले गया। सन् 1921 से 1925 तक श्री शंकर कुरुप, तिरुविल्वामला में रहे। सन् 1925 में वे चालकुडी महाविद्यालय आ गए। इसी वर्ष 'साहित्य कौतुकम' का दूसरा भाग प्रकाशित हुआ। उनकी प्रतिभा और प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई। सन् 1931 में 'नाले' (आगामी कल) शीर्षक कविता से वे जन–जन में पहचाने गए। सन् 1937 से 1956 तक वे महाराजा कॉलेज, एरणाकुलम में प्राध्यापक के पद पर कार्य करते रहे। प्राध्यापक से सेवानिवृत्त होने के बाद वे आकाशवाणी में सलाहकार बने। सन् 1968 में महामहिम राष्ट्रपतिजी ने उन्हें राज्य सभा सदस्य के रूप में मनोनीत किया। सन् 1968 से 1972 तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे। उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो के तिरुवनंतपुरम स्टेशन निर्माता के रूप में भी कार्य किया।

गोविंद शंकर कुरुप पर सन् 2003 में,
भारतीय डाक विभाग द्वारा ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं
की श्रृंखला के तहत जारी 'स्मारक डाक टिकट'

उल्लेखनीय कार्य और उपलब्धियां :

उनके उल्लेखनीय रचनाओं में लिखी गई कहानियां व कविताएं, नाटक, आत्मकथा, निबंध संग्रह, बाल साहित्य, अनुवाद, आदि शामिल हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं में सूर्यकांती, निमिषम, पथिकन्टे पाट्टु, विश्वदर्शनम्, मून्नरुवियुम् ओरु पुषयुम्, जीवनसंगीतम्, साहित्य कौतुकम्, पूजा पुष्पम्(कविता संग्रह), ओर्मयुडे ओलन्गलिल(आत्मकथा), गद्योपहारम्, मुत्तुम् चिप्पियुम्, राक्कुयिलुकल्(निबंध संग्रह), इलम चुंडुकल्, ओलप्पीप्पि, राधाराणी(बाल साहित्य), इरुट्टिनु मुन्पु, संध्या, अगस्त 15(नाटक), हैदर अली, टिप्पु सुल्तान (जीवनी), आदि प्रमुख हैं। इनके अलावा, उन्होंने गीतांजली, मेघदूत और रुबाइयात का भी अनुवाद किया।

सफलता कभी भी गलतियां न करने में नहीं,
बल्कि उसी गलती को फिर से न दोहराने में निहित है।
– जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

आलेख

मयंक पाठक
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय
लखनऊ

भारतीय बैंकिंग और फिनटेक पारिस्थितिकी तंत्र

हम जानते हैं भारत की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने व उसके विकास को निरंतरता प्रदान करने में भारतीय बैंकिंग तंत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। यही कारण है कि भारतीय बैंकिंग तंत्र को परिपक्व बनाने के लिए बैंक और नई पीढ़ी के स्टार्टअप को परस्पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सहयोग के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आज पारंपरिक बैंकिंग व्यवस्था ने नए जमाने के बदलते स्वरूप के साथ डिजिटल बैंकिंग को अपनाया है, ताकि बैंक अपना परिचालन जारी रख सके। डिजिटलीकरण के युग में वित्तीय तकनीक (फिनटेक – Financial Technology) युक्त ऋण मुहैया करानेवाली कंपनियां सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्योगों (एमएसएमई) के विकल्प के रूप में तेज़ी से उभर रही हैं। अब फिनटेक का जमाना है, पारंपरिक बैंकिंग का समय नहीं है। बदलाव के इस दौर में हमें तीव्र गति से नए जमाने की डिजिटल बैंकिंग को अपनाना होगा, उसी के अनुरूप बदलना होगा, ताकि हम इतिहास का हिस्सा बनकर ना रह जाएं।

शाब्दिक अर्थ में अगर देखें तो फिनटेक का अर्थ है Financial Technology : वित्तीय तकनीक, अर्थात् वित्तीय कार्यों में तकनीक के उपयोग को संक्षिप्त रूप से फिनटेक कहा जाता है। यह उन वित्तीय नवोन्मेषों के बारे में बताता है जो तकनीकी आधारित है। फिनटेक पारिस्थितिकी तंत्र पारंपरिक वित्तीय सेवाओं और विभिन्न कंपनियों तथा व्यापार में वित्तीय पहलुओं के प्रबंधन में आधुनिक और एकीकृत तकनीक का कार्यान्वयन है। फिनटेक उस नई तकनीक को संदर्भित करता है, जिनके माध्यम से वित्तीय सेवाओं का प्रयोग, इसमें सुधार और स्वायत्तता तथा कुशलता लाने का प्रयास किया जाता है। आज नए लघु उद्योगों से लेकर बड़ी–बड़ी टेक कंपनियां और सुव्यवस्थित वित्तीय संस्थान, वित्तीय सेवाओं की वैल्यू चैन में इस तकनीकी प्रगति के प्रयोग से अंतिम उपभोक्ता को चुस्त, कुशल और श्रेष्ठ सेवाएं प्रदान कर भिन्नता का अनुभव करा रहे हैं।

फिनटेक पारिस्थितिकी तंत्र बदलते बैंकिंग परिदृश्य में बुनियादी बदलाव लाने की असीम संभावनाएं रखता है। फिनटेक के सहारे उपभोक्ता प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर विकल्पों के बृहत्तर वर्ग से चुनाव कर सकता है। इसके साथ ही परिचालन लागत में कमी होने से वित्तीय संस्थानों की कार्यक्षमता में भी गुणात्मक वृद्धि होती है। आज क्रिप्टोकरेंसी, रेगटेक, बैंक टेक, इंश्योर टेक, डिजिटल पेमेंट, डिजिटल ऋण के साथ अलग–अलग क्षेत्रों और उद्योगों में शिक्षा, निवेश प्रबंधन, खुदरा बैंकिंग, पूंजी जुटाना आदि क्षेत्र फिनटेक में शामिल हैं। आइए फिनटेक को एक उदाहरण से समझते हैं: ''पारंपरिक बैंकिंग में पासबुक में प्रविष्टियां हाथ से की जाती थीं, वित्तीय विवरण रजिस्टर में लिखे जाते थे और ब्याज की गणना कैल्कुलेटर से की जाती थी जिसमें काफी समय और श्रम लगता था। किंतु अब तकनीक (सॉफ्टवेयरों) की मदद से ये कार्य पलक झपकते संपन्न हो जाते हैं। बैंकिंग संस्थानों में कोर बैंकिंग प्रणाली के आने से जहां संव्यवहारों के नए–नए आयाम विकसित हुए वहीं दूसरी ओर सरलता और सुगमता भी हो गई। इन्हीं वित्तीय संव्यवहारों को

सरल और सुगम बनाने वाली वित्तीय तकनीक को फिनटेक कहा गया है।'' तथापि फिनटेक इतने तक ही सीमित नहीं है।

भारत वित्तीय तकनीकी में अपने बढ़ते कदम के साथ आज विश्व में दूसरे स्थान पर है। इतना ही नहीं भारत, चीन को पछाड़ते हुए हुए एशिया में फिनटेक (FinTech) के सबसे बड़े बाज़ार के रूप में उभरा है । विश्व के दूसरे सबसे बड़े फिनटेक हब अमेरिका के बाद भारत में 'फिनटेक बूम' अर्थात् फिनटेक का तीव्र और व्यापक विकास देखा गया है। वर्तमान समय में फिनटेक अर्थव्यवस्था के सबसे अधिक संपन्न क्षेत्र व्यापार वृद्धि और रोज़गार सृजन दोनों मामलों में हम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। फिनटेक वित्तीय प्रणाली में पारदर्शिता लाने के साथ वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायक है।

विगत वर्षों में सरकार की मंशा को ध्यान में रखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक ने ''कम–नकदी'' वाले समाज के लक्ष्य की दिशा में डिजिटल भुगतान के प्रयोग को अधिक बढ़ावा दिया है। इसका ध्येय ये था कि क्रमिक विकास के साथ एक ऐसी भुगतान प्रणाली विकसित हो जो पहले से तेज़ भुगतान प्रसंस्करण की तकनीक के प्रयोग के साथ संरक्षा, सुरक्षा, सुविधा और आसान पहुँच की खूबियों से लैस हो। बैंक वहनीय लागत, अंतर परिचालनीयता और ग्राहक जागरूकता व संरक्षण पर भी पुरज़ोर ध्यान दे रहे हैं। बैंक भुगतान सेवाओं के पारंपरिक माध्यम रहे हैं, तथापि तीव्र गति से बदलती तकनीकी के साथ इस क्षेत्र में बैंकों का अब एकाधिकार नहीं रहा है। बैंकेतर सस्थाएं भी ये सेवाएं प्रदान कर रही हैं और बैंकों को कड़ी टक्कर दे रही हैं, फिर चाहे वो बैंकों को तकनीकी सेवा प्रदान करना हो या खुदरा इलेक्ट्रॉनिक भुगतान सेवाएं।

बैंकिंग का कोई भी आयाम फिर चाहे वो शाखा बैंकिंग अर्थात् परंपरागत बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, टेली बैंकिंग, कियोस्क बैंकिंग या डोर स्टेप बैंकिंग, किसी की भी परिकल्पना फिनटेक अर्थात् Financial Technology के बिना नहीं की जा सकती है। आज खाता विवरण, लेन–देन, अंतरण, पासबुक प्रिंटिंग सभी कुछ फिनटेक पर ही निर्भर है। यहां तक कहा जा सकता है कि बैंकिंग के अन्य विकल्प जैसे – इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, टेली बैंकिंग, कियोस्क बैंकिंग आदि की तो फिनटेक के बिना कल्पना भी असंभव है। भुगतान सेवाओं में आईएमपीएस (Immediate Payment Service), यूपीआई (Unified Payments Interface), भीम (Bharat Interface for Money) बीबीपीएस (Bharat Bill Pay System) और एईपीएस (Adhaar Enabled Payment System) के माध्यम से एक अत्याधुनिक आधार संरचना और तकनीक का प्लेटफॉर्म विकसित करने की पुरज़ोर कोशिश हुई है । फिनटेक के द्वारा खुदरा भुगतान का परिदृश्य ही बदल गया है और पिछले पांच वर्षों में इलेक्ट्रॉनिक भुगतान में लगभग 5 गुना वृद्धि हुई है।

फिनटेक के द्वारा बैंकिंग तकनीकी और वित्त व्यापार के क्षेत्रों में भी आशातीत विकास हुआ है। उधार देने व पूंजी जुटाने के वैकल्पिक स्वरूप उभर रहे हैं जिनमें पारंपरिक उधारदाताओं और पारंपरिक मध्यस्थों की भूमिका को बदल डालने की संभावना है। क्राउड फंडिंग जिसमें निवेशकों द्वारा एक बड़े समूह से निधि जुटाई जाती है, भारत में शैशवावस्था में है। समकक्षी या पीयर–टू–पीयर उधार में लघु और मझोले उद्यमों के लिए वित्त की उपलब्धता को बेहतर करने का सामर्थ्य है और इस व्यापार में कई इकाईयां विशुद्ध रूप से डिजिटल या मोबाइल एप्लीकेशन पर ही बखूबी कार्य कर रही हैं। फिनटेक एप्लीकेशन का एक और क्षेत्र इनवॉइस ट्रेडिंग है जो विकास के पथ पर अग्रसर है। यह उन एमएसएमई उधारकर्ताओं की सहायता करता है जिन्हें भुगतान में देरी के कारण कार्यशील पूंजी और नकदी के प्रवाह की समस्या रहती है। ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्काउंटिंग सिस्टम (TReDS) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्थापित वित्तपोषण की एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ बिलों व इनवॉयस को भुनाने के लिए तकनीक का प्रयोग किया जाता है। यह सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) की व्यापार प्राप्तियों के वित्तपोषण / छूट की सुविधा के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म है जो कई वित्तपोषणकर्ताओं के माध्यम से होता है। फिनटेक द्वारा डिजिटल भुगतान की पैठ एवं वित्तीय समावेशन के विस्तार के लिए कई नवोन्मेषी प्रयास किए जा रहे हैं।

फिनटेक संस्थाएं अपने नवोन्मेषी उत्पादों के साथ देश के कोने–कोने में बैंकिंग सेवाएं सफलतापूर्वक उपलब्ध करा रही हैं । आज प्रत्येक उपभोक्ता का संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से फिनटेक से जुड़ा है, मसलन अगर आप अपने रोज़मर्रा के खर्चों को भी जैसे–दुकान, किराया, बिजली, रेस्टोरेंट के बिल आदि का भुगतान नकद की जगह मोबाइल वैलेट या कार्ड से करते हैं तो आप भी फिनटेक क्रांति का हिस्सा हैं। इस क्रांति ने न केवल नकद रखने की आवश्यकता को खत्म किया है बल्कि बैंकिंग सेवाओं का भी स्वरूप बदल कर रख दिया है। फिनटेक संस्थाएं स्टार्टअप बैंकों के

लिए भुगतान, लेन–देन, निधि अंतरण आदि सेवाएं प्रदान करने में मददगार साबित हो रहे हैं और साथ ही ये देश के सुदूर इलाकों में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने में सक्षम हैं। बैंक और फिनटेक संस्थाओं के एकसाथ काम करने से देश में डिजिटलीकरण को गति मिली है। फिनटेक प्रदाता बचत, उधार, बीमा और अन्य वित्तीय उत्पादों सहित सलाहकार सेवाओं की भी पेशकश कर रहे हैं, ऐसे में आने वाले दिनों में फिनटेक संस्थाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण व व्यापक होगी।

यद्यपि बैंकिंग सेवाओं की लाभप्रदता में फिनटेक का बहुत बड़ा योगदान है तथापि गूगल पे, पेटीएम, अमेज़ॉन, फ्रीचार्ज जैसी कंपनियों ने बैंकों की लाभप्रदता को प्रभावित किया है। भविष्य में ये कंपनियां एक मंच पर एकीकृत वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के ज़रिए बैंकों के अस्तित्व के लिए चुनौती खड़ी कर सकती हैं। बैंकों को इस पर पैनी नज़र रखनी होगी और अगर यदि ये कंपनियां बैंकिंग हिस्सेदारी में सेंध लगाती हैं तो बैंकों को अलग रणनीति के साथ काम करना होगा। आज विश्व के भुगतान बाज़ार में अधिकांश कंपनियां गैर–बैंकिंग क्षेत्र से ही हैं। इन सबके बावजूद फिनटेक की क्रांति जहाँ अवसरों का एक नया विश्व खोलती है, वहीं विनियामकों व पर्यवेक्षकों के लिए जोखिम और चुनौतियां भी पेश करती हैं। आवश्यकता है कि इस विकास क्रम में इन जोखिमों को जल्द चिन्हित किया जाए और उनसे संबंधित विनियामक व पर्यवेक्षी चुनौतियों के शमन में आवश्यक कदम उठाए जाएं।

भारतीय बैंकों के विकास के अवसरों में दो उद्देश्य बड़े महत्वपूर्ण हैं। पहला–फिनटेक प्रयोगकर्ताओं (ग्राहक/उपभोक्ता) के लिए वित्तीय प्लेटफार्म की सुगमता उपलब्ध कराना; दूसरा–फिनटेक अपनाने के कारण संभावित जोखिमों का विश्लेषण व निवारण। वित्तीय रूप से वंचित जनसंख्या की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समुचित और वित्तीय उत्पादों को तैयार करना, डिजिटल ऑनबोर्डिंग और निवेश को प्रोत्साहित करना प्रथम उद्धेश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। आधार पारिस्थितिकी तंत्र (Aadhar Ecosystem) का प्रभावी उपयोग डिजिटल प्लेटफॉर्म अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित कर सकता है, जैसाकि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के मामले में हो रहा है। हमें प्रभावी तरीके से अंतर क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के साथ–साथ विवादों का ऑनलाइन समाधान प्रस्तुत करने के लिए बहुभाषी वित्तीय साक्षरता और एक मज़बूत शिकायत निवारण तंत्र सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

संभावित जोखिम और उनको कम करने में 'रेगटेक' (रेगुलेटरी टेक्नॉलजी) और 'सुपटेक' (सुपरवाइज़री टेक्नॉलजी) की महत्वपूर्ण भूमिका है। रेगटेक प्लेटफॉर्म विनियामक अनुपालन को स्वचालित प्रक्रियाओं द्वारा अधिक प्रभावी बनाता है और अनुपालन की लागत को भी कम करता है। रेगटेक ऐसी तकनीक पर केंद्रित है जो प्रदान की जाने वाली विनियामक अपेक्षाओं को दक्ष और प्रभावी बनाता है। सुपटेक विनियामकों और पर्यवेक्षकों द्वारा प्रयोग किया जाता है। यह डेटा संग्रहण, रिपोर्टिंग, डेटा विश्लेषण और निर्णय लेने, बाज़ार निगरानी तथा सतर्कता, केवाईसी/एएमएल/सीएफटी तथा साइबर सुरक्षा नीति के लिए सहायक है। इन दोनों प्लेटफॉर्म/एप्लीकेशन का उद्धेश्य स्वचालित रूप से कार्य में दक्षता लाना, नई क्षमताओं को विकसित करना और कार्य को आसान बनाना है। बैंकों में प्रयोग की जाने वाली डेटा प्रधान एप्लीकेशन, जोखिम आधारित पर्यवेक्षण सुपटेक का ही स्वरूप है। आज डेटा विश्लेषण (DA), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्लाउड कंप्यूटिंग(CC), भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) मैपिंग, डेटा ट्रांसफर प्रोटोकॉल, बायोमेट्रिक्स द्वारा विनियमन, पर्यवेक्षण और जोखिम प्रबंधन का भविष्य रेगटेक और सुपटेक जैसे मज़बूत प्लेटफॉर्मों पर टिका है।

इन्हीं चुनौतियों के क्रम में फिनटेक के प्रयोग के साथ–साथ, डेटा गोपनीयता, डेटा सुरक्षा, साइबर सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय भी जुड़े हैं। डेटा सुरक्षा और गोपनीयता को उपलब्ध उन्नत तकनीक से सुरक्षित करने के साथ–साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रयोग की जानी वाली एल्गोरिथम भी सुनियंत्रित होनी चाहिए। साइबर सुरक्षा को ब्लॉक चैन तकनीकी के माध्यम से अभेद्य बनाना होगा। तकनीकी सुरक्षा उपायों की स्थापना के साथ फिनटेक के लाभ और साइबर हमले से बचाव के लिये ग्राहकों को भी शिक्षित और प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है।

फिनटेक में भारतीय बैंकिंग के भविष्य को बदलने की अपार संभावनाएं हैं। यह भारत में वित्तीय सेवाएं और वित्तीय समावेशन में गुणात्मक सुधार के साथ न्यूनतम लागत में उच्च कोटि की सेवाएं प्रदान करने में सक्षम है। भारत अपने नवोन्मेषी प्रयासों एवं प्रभावशाली तकनीक के समन्वयन द्वारा वैश्विक स्तर पर फिनटेक कंपनियों को अवसर प्रदान कर रहा है। इन अवसरों को देखते हुए यह भी सत्य है कि फिनटेक कारोबार के लिए भारत विश्व का सबसे बेहतर देश है।

आलेख

मिहिर कुमार मिश्र
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय
नोएडा

भाषा का लालित्य

भाषा शब्द संस्कृत की ''भाष्'' धातु से व्युत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है ''व्यक्त वाणी''।

एक प्रकार से इस धातु के अर्थ में ही भाषा का लक्षण विद्यमान है। व्यक्त वाणी का अर्थ है स्पष्ट और पूर्ण अभिव्यंजना। यह उच्चरित या वाचिक भाषा से ही संभव है जिसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म अर्थों के बोधक अनंत ध्वनि संकेत होते हैं। अत: 'भाषा' मनुष्य की वाचिक भाषा के लिए ही उपयुक्त है, अन्य माध्यम के लिए नहीं।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम हो सकते हैं। रेलवे गार्ड लाल– हरी झंडियों से अपनी इच्छा प्रकट करता है; बस वाला सीटी से, सड़क पर खड़ा हुआ मुसाफिर हाथ के संकेत से, शिक्षक डंडा दिखाकर। पर ये मूक भाषा हैं, अव्यक्त हैं। ये संकेत हैं और इन संकेतों को भाषा नहीं कहा जा सकता।

भाषा अपने आप में मनुष्य की सर्जनात्मक चेतना का सबसे बड़ा चमत्कार है। मनुष्य ने आज तक जितने आविष्कार किए उनमें सबसे प्राचीन, सबसे जटिल, सबसे सार्थक और सबसे महान आविष्कार है भाषा। आरंभ में मनुष्य भी अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए उसी प्रकार के ध्वनि उत्पन्न करता होगा जैसे अनेक मानवेतर प्राणी आज भी करते हैं। समयांतर में मनुष्य ने अपनी विवेक शक्ति से ध्वनियों को विभक्त करके अलग–अलग वर्ण निश्चित किए, फिर अर्थवान् शब्द बनाए, फिर विशेष नियमों से उपयुक्त क्रम में रखकर वाक्य निर्मित किए। यह प्रक्रिया मनुष्य में विद्यमान मस्तिष्क की नैसर्गिक रचनात्मक क्षमता की विशेषता है।

निश्चित रूप से अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि भाषा ही एकमात्र वह साधन है जो अन्य पशु से मनुष्य को पृथक करती है और उसे मनुष्य बनाती है। साहित्य, ज्ञान, विज्ञान, कला, आदि क्षेत्रों में मनुष्य की समस्त उपलब्धियों का एकमात्र आधार भाषा ही है। स्वभावत: भाषा का मनुष्य के जीवन में अत्यंत ही व्यापक महत्व है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो भी लौकिक व्यवहार संपन्न होता है वह भाषा के द्वारा ही होता है। मनुष्य प्रेम भी करता है तो भाषा की सहायता से और झगड़ने के लिए भी भाषा

की ही ज़रूरत पड़ती है। भाषा ने जन – समुदाय के एकीकरण में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भाषा की शक्ति कठिन शब्दों से नहीं वरन् आसान शब्दों के प्रयोग से निखरती है। भाषा का सौंदर्य तब बढ़ता है जब लेखक/ वक्ता उन सभी शब्दों को आत्मसात करता है जो जनता/ आमजन की जीभ पर चढ़े हुए हैं। कोई भी शब्द केवल इसीलिए ग्राह्य नहीं होता कि वह संस्कृत भंडार का है, न शब्दों का अनादर केवल इसलिए उचित है कि वे अरबी या फारसी के भंडार से आए हैं। जो भी शब्द प्रचलित भाषा में चल रहे हैं, जो भी शब्द सुगम, सुंदर और अर्थपूर्ण हैं, उसे ही सहज एवं सुगम भाषा के रूप में प्रचारित एवं प्रसारित करनी चाहिए।

भाषा पर संकट:

वैश्वीकरण के बाद अंग्रेज़ी वर्चस्व और तकनीकी क्रांतियाँ भाषाओं की भिन्नता भले ही कम करती जा रही हो, पर ये हर भाषा के भीतर भिन्नता बढ़ा रही हैं ताकि समाज में न्यूनतम संबंध, संवाद और साझापन बचे। यही वजह है कि अंग्रेज़ी छोड़कर दुनिया की सभी भाषाएं एक न एक तरह से संकट में हैं।

कई भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसी स्थिति को देखते हुए यूनेस्को ने संकटग्रस्त भाषाओं पर सोचना, विचारना एवं उसके उत्थान के लिए काम करना शुरु कर दिया है। परिणामस्वरूप, वर्ष 1993 को विलुप्त होती भाषाओं का वर्ष घोषित किया। सैकड़ों भाषाओं के खामोश होने की संभावनाएं हैं। फलस्वरूप, भाषाई–सांस्कृतिक विरासत का एक बड़ा हिस्सा विलुप्त होने के कगार पर है। भाषा पर खतरा सोच एवं संवेदना पर भी संकट उत्पन्न करता है। इसलिए सोचने–समझने वाले हर संवेदनशील नागरिक को भाषा के प्रति सतर्क होना चाहिए।

मेरी समझ

सुस्वरम बदरी नारायण मूर्ति
वरिष्ठ प्रबंधक
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान
मणिपाल

अपने–पराये ,
स्वदेशी–विदेशी,
जैसे भेदभावों के बिना,
हम सब एक हैं,
विशाल मनोभावना की दोस्ती है,
मिलन ही प्यार,
प्यार ही अनुराग,
अनुराग ही घनिष्ठता है।।

मन को मन,
जीवन को जीवन,
मेरे लिये है तू और,
तेरे लिये हूँ मैं,
यही सिद्धांत स्नेह की परिभाषा है।।

मित्र धर्म के हृदय परिवर्तन और पुनर्मिलन में,
दोस्ती की विजय प्राप्त होती है,
अर्ज़ किया है,
स्नेह सागर जैसा,
प्यार लहरें जैसा,
अनुराग तरंगें जैसा,
तेरी दोस्ती के फूल में ,
मैं हूँ सुगंध,
यही मेरी समझ है।।

आलेख

सुप्रिया कौंडिण्य
एकल खिड़की परिचालक
क्षेत्रीय कार्यालय
औरंगाबाद

एक संस्मरणीय यात्रा – केरल (देवभूमि)

कहा जाता है कि इस संपूर्ण जगत का निर्माता ईश्वर है। किंतु इस ईश्वर की भी अपनी एक भूमि है जो देवभूमि यानी केरल के नाम से जानी जाती है। सन् 2018 में मेरे परिवार के साथ मुझे इस देवभूमि की यात्रा करने का अवसर मिला। हमारी इस यात्रा की शुरुआत औरंगाबाद हवाई अड्डे से हुई। औरंगाबाद से मुम्बई और फिर मुम्बई से कोच्चि तक की हवाई यात्रा हमें तय करनी थी। सुबह 8 बजे से हम यात्रा करते हुए 45 मिनट में मुम्बई पहुंच गए। वहां थोड़ा आराम कर हम आगे हवाई जहाज से शाम 06.00 बजे कोच्चि पहुंचे। हवाई अड्डे से निकलकर होटल पहुंचे। काफी यात्रा कर थक जाने के कारण उस दिन आराम किया।

कोच्चि तटीय शहर है। यहां व्यवसायिक बंदरगाह होने के साथ–साथ भारतीय नौसेना का मुख्य केंद्र भी है। उस रात कोच्चि में आराम कर दूसरे दिन सुबह तैयार होकर 08.00 बजे हम मुन्नार की ओर चल पड़े। कोच्चि से मुन्नार की 4–5 घण्टे की यात्रा को हम निसर्ग यात्रा कह सकते हैं। यहां तक पहुंचने की सड़क किसी पर्वतारोहण से कम नहीं है। जैसे–जैसे हम चढ़ते गए वैसे बड़े–बड़े वृक्ष और केले के पेड़ों के झुंड नज़र आते गए। ये पेड़ों के झुंड खत्म होते ही लगभग 2500 फीट ऊपर जाने के बाद चाय के बागान शुरू हो जाते हैं। ये सब देखके लगता है सचमुच प्रकृति के सामने इंसान कुछ भी नहीं है। ऐसा लगता है मानो प्रकृति ने हरियाली की चादर ओढ़ ली हो। कहीं–कहीं चाय की फैक्ट्रियां भी दिखाई देती हैं। यहां मुन्नार और चाय का रिश्ता, चाय के प्रकार, लाभ और प्रोसेसिंग की जानकारी दी जाती है। मुन्नार का मौसम ठंडा रहता है, सर्द हवा चलती रहती है जो पर्यटकों को आकर्षित करती है। इसी वजह से यहां पर्यटन विकास के साथ–साथ स्थानीय रोज़गार को भी बढ़ावा मिल गया है। मुन्नार स्थित एक गार्डन में फूलों की कई प्रजातियां हमें देखने को मिलती हैं। दिनभर इन सब स्थानों का आनंद लेते हुए हमने रात को मुन्नार में ही आराम किया। दूसरे दिन हमें ठेकाडी के लिए निकलना था।

अगले दिन सुबह हम ठेकाडी के लिए निकल पड़े। मुन्नार से ठेकाडी लगभग 6 घंटे का सफर है। ठेकाडी पहुंचते–पहुंचते कई सारे मसाले के बागान हमें देखने को मिलते हैं। ये बागान पर्यटकों के लिए खुले रहते हैं, जहां हमें विविध मसाले के वृक्ष, कुछ आयुर्वेदिक औषधीय गुण वाले पेड़ों की जानकारी दी जाती है। यहां मसाले के साथ–साथ छोटे केलों का भी उत्पादन किया जाता है। यह सब व्यवसायिक तौर पर किया जाता है, जहां इन मसाले को आनेवाले पर्यटकों को बेचा जाता है। ठेकाडी में हाथी पर बैठकर सैर करने का आनंद ही कुछ और है, हमने इसका भी आनंद लिया। यह सब देखते–देखते हम शाम होटल पहुंचे। फिर आराम फर्माते हुए अगले दिन की योजना बनाने लगे।

हमारा अगला पड़ाव था अलपुष्पा, जो समुंदर के बैकवॉटर से बना हुआ है। भागदौड़ भरी ज़िंदगी से अगर आप कुछ शांत और सुकून के पल बिताना चाहें तो अलपुष्पा एक परिपूर्ण जगह है।

अलपुष़ा के बैकवॉटर सबसे लोकप्रिय पर्यटन आकर्षण है। यहां छोटी नावों से लोग यात्रा करते हैं। अलपुष़ा का मुख्य आकर्षण है – हाऊसबोट। यह एक नाव होती है जो लकड़ी से बनी होती है, घर जैसी सारी सुविधाएं यहां उपलब्ध होती हैं। जैसे–टीवी, फ्रिज, ए सी, सोने के लिए बिस्तर आदि सब चीजें होती हैं। हाऊसबोट में किया गया सफर मेरे लिए सबसे यादगार रहा। रात को जब हाऊसबोट चलती है तो चंद्रमा के शीतल प्रकाश में समुंदर का पानी चमकने लगता है। ऐसा लगता है कि मानो जीवन में इससे सुंदर क्षण और कोई हो ही नहीं सकता। हाऊसबोट में एक दिन बिताकर हम अगले दिन सुबह रामेश्वरम के लिए निकल पड़े।

श्री रामनाथस्वामी मंदिर, रामेश्वरम

अलपुष़ा से रामेश्वरम का सफर लगभग 10 घंटे का है। दिनभर यात्रा करके हम रात को रामेश्वरम पहुंचे। यात्रा करके हम थक चुके थे, तो उस दिन रात हमने आराम कर अगले दिन रामेश्वरम घूमने का निर्णय लिया। रामेश्वरम एक धार्मिक स्थल है जो हिंदुओं के लिए पवित्र स्थल माना जाता है। तमिलनाडु के रामनाथपुरम ज़िले में स्थित यह मंदिर चार धामों में से एक है। यहां भगवान राम और भगवान शिव का मंदिर है। कहते हैं यहां भगवान शिव जी का लिंग भगवान राम ने लंका जाते समय स्थापित कर शिव जी की आराधना की थी। यहां 64 तीर्थों के पवित्र जल का संगम है। ऐसी मान्यता है कि यहां डुबकी लगाने से सारे पाप धुल जाते हैं। दक्षिण भारत में बनी यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह मंदिर रामनाथ स्वामी और रामेश्वरम द्वीप के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां भगवान शिव जी के दर्शन करके मन धन्य हो गया।

अब हम अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ चुके थे और वो था तिरुवनंतपुरम। इसको भारत के दस हरियाली वाले शहरों में गिना जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है – भगवान अनन्त का वास स्थान। भगवान अनन्त, हिंदू मान्यताओं के अनुसार शेषनाग है जिस पर भगवान विष्णु विराजते हैं। यहां का श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर, जहां भगवान विष्णु शेषनाग जी पर आराम की मुद्रा में बैठे हैं, नगर की पहचान बन गया है। यह मंदिर पारंपरिक वास्तुकला का एक उत्तम उदाहरण है। यहां भगवान का दर्शन करके हम कनकाकुन्नू पैलेस की ओर निकल पड़े, जो त्रावणकोर राजघराने की शाही निशानी है। यहां चित्रा आर्ट गैलरी और नेपियार संग्रहालय में आपको कई पुरानी और अद्भुत चीजें देखने को मिलती हैं। यहां की एक सबसे खास चीज़ अर्थात् 'सद्या' – एक थाली है जहां आपको 28 तरह के केरलीय व्यंजन परोसे जाते हैं। इन व्यंजनों की मिठास हमारे लिए बहुत ही खास थी।

अगले दिन हम तिरुवनंतपुरम से निकले और 4 घंटे का सफर करके 12.00 बजे कोच्चि पहुंचे जहां से हमें हवाई जहाज से 03.00 बजे मुम्बई के लिए रवाना होकर फिर औरंगाबाद पहुंचना था।

सच कहूं यह यात्रा मुझे आनंद, शांति, सुकून और बहुत सारी चीजें जीवनभर के लिए दे गई और एक सबसे खास बात मैं कहना चाहूंगी की यह यात्रा हमने एक यात्रा कंपनी द्वारा की थी। इसलिए हमारे साथ जो उनका एजेंट था वह राजस्थानी था। वह केरल में इतना घुल मिल गया था कि वहां की भाषा, संस्कृति और जीवनशैली आत्मसात कर चुका था। एक राजस्थानी गाइड, एक मराठी परिवार को केरल राज्य घुमा रहा था। यही तो हमारे भारत की विशेषता है – 'विविधता में एकता'। इन सारे सुखद अनुभवों की यादें संजोते हुए हम वापस आ गए। भारत के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र की यात्रा करने का मौका मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं था, जो मुझे जीवन का परमानंद दे गया।

आलेख

डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय
सहायक महा प्रबंधक
सेवानिवृत्त

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में : स्वभाषा का महत्व

किसी राष्ट्र की आत्मनिर्भरता और स्वभाषा के बीच अन्योन्याश्रय संबंध है। आज भारत ने आत्मनिर्भरता को मंत्र के रूप में अंगीकार किया है। किसी राष्ट्र की उन्नति में उसकी मातृभाषा (स्वभाषा) की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसे उपनिषद् के निम्नलिखित श्लोक में बहुत ही अच्छी तरह से निरूपित किया गया है –

''मातृभाषा परित्यज्य यो अन्यभाषामुपासते,
तत्र यांति हि ते देश: यत्र सूर्यो न भासते''

अर्थात् जो अपनी मातृभाषा को त्याग कर अन्य भाषा की उपासना करता है, वह देश सदा के लिए अंधकारावृत्त रह जाता है। वहां कभी ज्ञान रूपी सूर्य का प्रकाश व्याप्त नहीं हो पाता। भारतीय भाषाओं के इस महत्व एवं उनकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए ही सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित सभी भाषाओं में केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचना जारी करने की बात कही है।

किसी राष्ट्र की आर्थिक आत्मनिर्भरता के मामले में स्वभाषा कई रूपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज के वैश्वीकरण की बाज़ार व्यवस्था में निर्माण, थोक बिक्री और खुदरा बिक्री के तीन चरण हैं और इन तीनों चरणों में स्वभाषा का प्रयोग करके हम बेहतर उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। निर्माण प्रक्रिया के तीनों चरणों, कच्चे माल की प्राप्ति, उपयुक्त प्रौद्योगिकी, मशीनरी की प्राप्ति एवं उपयोग तथा सेवाओं में स्वभाषा का प्रयोग अपेक्षित है। कच्चे माल को तैयार माल में बदलने के लिए अपेक्षित ज्ञान, प्रतिभा और प्रौद्योगिकी की ज़रूरत पड़ती है। यह सब करने के लिए तीव्र इच्छाशक्ति होनी चाहिए और यह इच्छाशक्ति स्वभाषा से ही आएगी। अच्छे माल के निर्माण के लिए जो विश्व स्तर पर स्वीकार्य हो तथा उच्च गुणवत्ता वाला हो, इसके लिए हमें अपनी भाषा में अनुसंधान और विकास तंत्र विकसित करना होगा। अभी तक हम ये सभी कार्य परायी भाषा(अंग्रेज़ी) में करते आ रहे हैं, यदि इन्हें स्वभाषा में करें तो हमारे अनुसंधान में अद्भुत कल्पनाशक्ति का समावेश होगा जो परायी भाषा से कभी भी संभव नहीं है। यह वैसे ही है जैसे सपने परायी भाषा में न आकर हमेशा अपनी ही भाषा में आते हैं। सुप्रसिद्ध स्विस अर्थशास्त्री मार्क फेबर अपने प्रसिद्ध न्यूज लेटर, 'द ग्लूम – बूम एण्ड डूम रिपोर्ट' में लिखते हैं कि वैश्वीकरण की वर्तमान व्यवस्था का झुकाव धनी देशों की ओर है, वे अपने लाभ को देखते हुए व्यापारिक समझौते करते हैं जिनसे विकासशील देशों के उभरते बाज़ारों को हानि उठानी पड़ती है, पेटेंट तथा क्रय शक्ति समता (पर्चेज़िंग पावर पैरिटी) जैसी व्यवस्थाएं इस अन्याय के उदाहरण हैं। आज भी हिंदी या भारत की किसी भी भाषा में ऐसा कोई विश्वसनीय लोकप्रिय समाचार पत्र नहीं निकलता है जो विश्व बाज़ार के समाचार को ग्राहकों तक पहुंचाता हो, जबकि अंग्रेज़ी समेत दुनिया की सभी समुन्नत भाषाओं यथा–जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, मंदारिन आदि में इस तरह की सूचनाओं

को प्रचारित–प्रसारित करने की व्यवस्था है। स्वभाषा में अनुसंधान न होने के कारण ही भारत में यह स्थिति आई है। यदि स्वभाषा में यानी हिंदी में अनुसंधान तथा थोक बिक्री में इसका प्रयोग किया जाएगा तो भारत का माल भी विदेशों में भारी मात्रा में बिकेगा, भारत की आर्थिक हिस्सेदारी लगातार बढ़ेगी जो देश को आत्मनिर्भर बनाने में मददगार साबित होगी। आज सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा भी किसी राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। लेन–देन की प्रक्रिया में स्वभाषा बड़ी भूमिका निभाती है। इस लेन–देन की प्रक्रिया में आवास ऋण, म्युचुअल फंड, क्रेडिट कार्ड, स्मार्ट कार्ड कारोबार, कैपिटल मार्केट, निर्गम प्रबंधन, मुद्रा बाज़ार, प्रतिभूति बाज़ार, वित्तीय सेवाएं, उद्यम पूंजी, शाखा बैंकिंग, लीजिंग–फैक्टरिंग आदि क्षेत्रों में स्वभाषा का प्रयोग बढ़ाने की ज़रूरत है। अभी तक हम अपने देश में इन सभी कार्यों में केवल अंग्रेज़ी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

भारत में जो वस्तुएं विदेशों से आ रही हैं, उनकी खुदरा बिक्री में यहां वहां भारतीय भाषाएं दिख जाती हैं, पर इस देश में तैयार वस्तुओं की विदेशों में बिक्री की भाषा में स्वभाषा–हिंदी नहीं है और न ही उच्च लागत की वस्तुओं की देश में बिक्री की भाषा में ही हिंदी–स्वभाषा है। लेखक ने रोज़मर्रा के उपयोग में आने वाले जर्मनी, फ्रांस के कई ऐसे उत्पाद देखे हैं जिन पर अंग्रेज़ी में मेड इन जर्मनी, मेड इन फ्रांस लिखा होता है क्योंकि दुनिया को यह मालूम है कि भारत में प्रभाव–शाली लोगों की अपनी भाषा अंग्रेज़ी ही है। गौरतलब है कि जर्मनी, फ्रांस वाले अपने यहां बिकने वाले सामानों पर भूलकर भी अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करते। पिछले वर्ष अपनी यूरोप यात्रा के दौरान मैंने जर्मनी एवं फ्रांस में यह अनुभव किया कि ज्यों ही हम इंडियन कहते हैं, यूरोप के लोग हमसे अंग्रेज़ी में बात करना शुरु कर देते हैं। कई जगहों पर जो चीज़ें भारतीयों के लिए बनी हैं या जहां पर अधिक भारतीय जाते हैं, वहां पर सारी जानकारी अंग्रेज़ी में ही होती है। जर्मन संसद देखने के लिए बर्लिन में जो ऑडियो गाइड (नियर फील्ड कम्युनिकेशन) मुझे मिला उसकी भाषा अंग्रेज़ी थी। यह ऑडियो गाइड जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, अरबी, मंदारिन में भी उपलब्ध था, पर हमारे लिए केवल अंग्रेज़ी में, वैसे भी यह ऑडियो गाइड हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा में उपलब्ध नहीं था। हमें दुनिया में यह बात भी प्रचारित–प्रसारित करने की आवश्यकता है कि हमारे पास हिंदी समेत कई समुन्नत भाषाएं हैं, केवल अंग्रेज़ी ही हमारी अपनी भाषा नहीं है।

यहां यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि रक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार बहुत बड़ा निवेश करने जा रही है जिसमें सामरिक अस्त्र–शस्त्र से लेकर युद्धपोत एवं लड़ाकू विमान तक को स्वदेश में तैयार करने की योजना है। इसी तरह से कृषि, अंतरिक्ष (स्पेस), ऊर्जा, पर्यटन, रेलवे, ग्रामीण विद्युतीकरण, नेशनल हाइवे, ग्रामीण सड़क, हाउसिंग, नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन, एमएसएमई, जल जीवन मिशन आदि जैसे तमाम क्षेत्र हैं जिनमें अरबों– खरबों रुपये निवेश करने की योजना है, मूल्य संवर्धन (वैल्यू एडिशन) की योजना है, कौशल वृद्धि करने की योजना है। इसी कड़ी में भूतपूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा शुरु की गई स्वर्णिम चतुर्भुज, रोड से रेल, रेल से पोर्ट, पोर्ट से एयर पोर्ट को जोड़ने तक की योजनाएं हैं। विश्व व्यापार में समुद्र तटों के उन्नयन की तैयारी हो रही है। समुद्र तट से जुड़े 173 ज़िलों के विकास की बात प्रधान मंत्री जी ने स्वाधीनता दिवस के संबोधन में कही है। इन सभी क्षेत्रों में स्वभाषा हिंदी का उपयोग करके मनोवांछित उपलब्धि हासिल की जा सकती है। चीन का उदाहरण हमारे सामने है, उसने आर्थिक विकास के सभी क्षेत्रों में तरक्की एवं शानदार उपलब्धि अपनी भाषा अर्थात् मंदारिन के माध्यम से ही हासिल की है।

हम यह जानते हैं कि रूस, चीन, जापान, मैक्सिको, अर्जेन्टिना, निदरलैण्ड, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी इनमें से कोई भी देश अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करता। फिर भी, सारी दुनिया में उनका सिक्का चलता है। हमें भी अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए, यह सारी दुनिया में फैलेगी, इसका विश्वास होना चाहिए। स्वभाषा

अपनी मां की तरह है यदि हम अपनी मां का आदर नहीं करेंगे तो भला दूसरा क्यों करेगा। आज भारत को यदि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना है, विकसित राष्ट्र बनना है, दुनिया की सर्वाधिक बड़ी अर्थव्यवस्था बनना है, विश्वगुरु बनने की अभिलाषा है, 'लोकल को वोकल' करना है तो उसके लिए महत्वपूर्ण साधन एवं मंत्र केवल हिंदी और स्वभाषा ही है। स्वभाषा के प्रयोग से आदेश देने वाले अधिकारी और कार्य करने वाले कर्मचारी व श्रमिक वर्ग में समझदारी बढ़ती है, एकजुटता आती है। स्वभाषा में कार्य होने की सुविधा मिलने पर कामगार संवर्ग के कर्मचारी भी तकनीकी कार्यों, मशीनी बारीकियों को सीखने में रुचि दिखाएंगे और कार्य भी कर सकेंगे। यही कारण है कि हाल ही में जारी नई शिक्षा नीति 2020 में मातृ भाषा, क्षेत्रीय भाषाओं के अध्ययन पर तथा उसी के माध्यम से ज्ञान अर्जन पर अधिक ज़ोर दिया गया है।

आज से लगभग 125 वर्ष पहले भारत की आर्थिक उन्नति और आत्मनिर्भरता के संबंध में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रखर चिंतक बाल गंगाधर तिलक द्वारा कही गई यह बात आज भी प्रासंगिक है, 'समाज की गरीबी, उपेक्षा और पिछड़ेपन का असली कारण अशिक्षा एवं अपनी भाषा में रोज़गार के अवसर न उपलब्ध कराना भी है। जहां अपनी भाषा के प्रति, साहित्य के प्रति, संस्कृति के प्रति सम्मान नहीं होगा वह अपनी आर्थिक उन्नति भी नहीं कर सकता और आत्मनिर्भर भी नहीं हो सकता।

हमारे युवा, आदिवासी, दलित, पिछड़े गांव और गरीबों को आगे बढ़ाने, आर्थिक दृष्टि से संपन्न करने और भारत को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प तभी पूरा होगा जब हमारी सारी आर्थिक गतिविधियां स्वभाषा में ही संपन्न होंगी।

जीवन सादगी का नाम है !

एक दिन, एक अमीर परिवार के पुत्र ने अपने पिता से पूछा–पिताजी गरीब होने का क्या मतलब है। उस आदमी ने सोचा कि क्यों न अपने पुत्र को इससे परिचित करा दें। उन्होंने फैसला किया कि वह कुछ दिन उसके साथ पहाड़ों में, एक स्थानीय परिवार के साथ बितायेंगे। उन्होंने वहां एक साधारण से घर में एक–साथ तीन दिन और दो रातें गुजारीं। वापसी यात्रा के दौरान, पिता ने अपने पुत्र से पूछा–''इस अनुभव के बारे में तुम्हारा क्या विचार है''? सब कुछ बहुत अच्छा था, पुत्र ने जवाब दिया। इससे तुमने क्या जाना? पिता ने पूछा। ''सबसे पहले, मैंने गौर किया कि हमारा एक कुत्ता है जबकि उनके पास चार कुत्ते हैं, हमारे पास घर पर एक जकूज़ी है लेकिन उनके पास साफ पानी की धारा है, जहां मछलियां तैरती हैं। मुझे पता चला कि रात में हमारे घर के बाहर रोशनी के लिए स्ट्रीट लैंप हैं, जबकि वे स्वच्छंद रूप से चंद्रमा और सितारों की रोशनी का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, हमारी छत से नज़ारा आसपास के घरों तक सीमित है, जबकि उनके लिए पूरे क्षितिज का नज़ारा ले पाना संभव है। मैंने देखा कि हम अपना भोजन खरीदते हैं, माइक्रोवेव ओवन में चीज़ों को पकाते हैं, जबकि वे पौधे लगाकर सब्ज़ियां उगाते हैं और फिर अपना भोजन लकड़ी के चूल्हे में पकाकर तैयार करते हुए स्वादिष्ट खाने का आस्वाद लेते हैं। हमारे पास अपने घर की सुरक्षा के लिए एक अलार्म सिस्टम है, जबकि पहाड़ में सभी दरवाज़े अपने पड़ोसियों पर विश्वास के बल पर खुले रहते हैं। हम अक्सर इंटरनेट से जुड़े रहते हैं, जबकि यहां बसे परिवार हमेशा आकाश, सूर्य, जीवन से, जल से, हरियाली से, माँ प्रकृति के उपहार से जुड़े होते हैं''। पिता को अपने पुत्र की निपुणता को देखकर अच्छा लगा और वे उसकी बातों से प्रभावित हुए। पुत्र ने यह कहकर अपनी बात समाप्त की–''धन्यवाद, पिताजी आपने मुझे पहाड़ी की यात्रा पर ले जाकर सही मायने में यह सिखाया कि हम वास्तव में कितने गरीब हैं और वे कितने अमीर''! पिताजी ने अपने पुत्र से कहा–''एक अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए केवल भौतिक चीज़ों का होना पर्याप्त नहीं होता, तुम्हें उन चीजों का आनंद लेना सीखना होगा जो पैसों से खरीदा नहीं जा सकता। विनम्रता और सादगी आदमी को महान बनाता है, इसे कभी मत भूलना''!

आलेख

विश्वनाथ प्रसाद साहू
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय
संबलपुर

राजभाषा हिंदी की स्थिति और संचार के साधन

किसी भी राष्ट्र के विकास में भाषा और संचार के साधनों का बहुमूल्य योगदान होता है। एक ओर जहां भाषा विचारों की वाहिनी होती है वहीं दूसरी ओर संचार समाज में सामंजस्य बनाए रखता है। इन्हें एक सिक्के के दो पहलू कहें तो अन्यथा न होगा। आज़ादी के बाद भारत में विकास का पथ द्रुत गति से आगे बढ़ रहा था। विकास पथ में बढ़ते हुए जहां एम.एस. स्वामिनाथन की अगुवाई में देश ने 'हरित क्रांति' से कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व उत्पादन देखा वहीं 1970 के दशक में वर्गिस कुरियन के नेतृत्व में दुग्ध उत्पादन में पूरे विश्व में अग्रणी दुग्ध उत्पादक के रूप में विख्यात हुआ जिसे 'श्वेत क्रांति' कहा गया। देश की स्वतंत्रता के पश्चात् इन दोनों क्रांतियों के कारण देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती गई।

अब, समय वैश्वीकरण का है जहां संचार क्रांति ने अपने पाँव पसारे हैं। इस दौर में स्वयं को जागरुक और अग्रणी रखने की होड़ सी मची है और यह सही भी है। मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानी रानी सारन्धा में कहा था कि :

''संसार एक रण–क्षेत्र है। इस मैदान में उसी सेनापति को विजयलाभ होता है जो अवसर को पहचानता है। वह अवसर पर जितने उत्साह से आगे बढ़ता है, उतने ही उत्साह से विपत्ति के समय पीछे हट जाता है। वह वीर पुरुष राष्ट्र का निर्माता होता है और इतिहास उसके नाम पर यश के फूलों की वर्षा करता है।''

किन्तु इस अवसर की प्राप्ति के लिए आवश्यक संचार क्रांति भाषा के बिना अधूरी है। विश्व के अन्य देशों जैसे–ब्रिटेन में अँग्रेज़ी, जापान में जापानी, चीन में चीनी और जर्मनी में जर्मन भाषा उनकी राजभाषा भी है और राष्ट्रभाषा है किन्तु यह स्थिति भारत में पूरी तरह विपरीत है, भारत के संविधान की आठवीं सूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है। भारत जैसे बहुभाषी देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी होने के नाते संचार के लिए सर्वमान्य भाषा हिंदी ही है। अतः यह कहना उचित होगा कि हिंदी ही संचार क्रांति में प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

भारत में राजभाषा की संकल्पना :

राजभाषा का सामान्य अर्थ राजकाज की भाषा है। हमारे देश में भाषा की अवधारणा अन्य देशों से परे है। किन्तु भारत में भाषा को तीन प्रकार से समझा जा सकता है : 1. राष्ट्रभाषा 2. राज्यभाषा या राज्य की राजभाषा और 3. राजभाषा

अ) राष्ट्रभाषा :

किसी भी राष्ट्र को चलाने के लिए उस राष्ट्र द्वारा समान्यतः अधिकांश जनसंख्या द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा को सरकारी कार्यों के लिए अपनाया जाता है जिसे राष्ट्रभाषा कहा जाता है। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को स्थान दिया गया है।

आ) राज्यभाषा या राज्य की राजभाषा :

भारतवर्ष राज्यों का संघ है जो 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों से मिलकर बना है। देश के प्रत्येक राज्य अपनी भौगोलिक स्थिति एवं क्षेत्र में अधिकांश बोली जाने वाली भाषा के अनुसार अपने सरकारी कार्यों के लिए भाषा का चयन करते हैं जिसे उस राज्य की राज्य भाषा कहा जा सकता है, बशर्ते कि राज्यभाषा संविधान में उल्लिखित 22 भाषाओं में से एक होनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र की राज्यभाषा मराठी, गुजरात की गुजराती, असम की असमिया, छत्तीसगढ़ की राज्य भाषा हिंदी है।

इ) राजभाषा :

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र होने के कारण स्वतंत्रता के बाद देश में सरकारी कार्यों के लिए एक भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। अत: समस्त भाषा–भाषियों को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा एक मत से हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इस कारण, प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है।

इसके अतिरिक्त, राजभाषा जनसामान्य तक पहुँचने के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) में धारा 3(3) के अंतर्गत 14 दस्तावेज़ों को लाया गया जिनका द्विभाषी होना अनिवार्य कर दिया गया। इसके बाद, भाषाओं के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) लागू किया गया जिसमें राज्यों को भाषाई क्षेत्र 'क', 'ख' और 'ग' में वर्गीकृत किया गया।

भारत में संचार व्यवस्था:

वर्तमान युग संचार क्रांति का है, घर में बैठे–बैठे पूरी दुनिया की खबर रहती है, 'वाट्सऐप' और 'फेसबुक' जैसे सोशल मीडिया ने विचारों को नया आयाम दिया है। सच कहें तो यही सच्चा लोकतन्त्र है जहां हर व्यक्ति अपनी–अपनी बात रख सकता है। इस डिजिटल इंडिया में कंप्यूटर, मोबाइल, टेलीफोन, वायरलेस, ई–मेल आदि का बोलबाला है। सूचना प्रौद्योगिकी ने तो इस बहुभाषी देश में जान फूँक दी है। आजकल सारे काम बड़ी ही आसानी से बिना किसी झंझट के होता है, चाहे बिजली के बिल का भुगतान करना हो या फिर चाहे रेलवे का टिकट आरक्षित करना हो। इन सब के लिए अब कहीं

जाने की जरूरत नहीं होती। जन्म प्रमाणपत्र से लेकर परीक्षा–शुल्क, भर्तियों के लिए आवेदन आदि सभी सुविधाएं ऑनलाइन हो गई हैं यानी फिंगरटिप्स पे आ गई हैं। प्रतियोगी परीक्षाएं जो पहले कागज़ पत्र के माध्यम से होती थीं उनका स्थान कंप्यूटर, की–बोर्ड और माउस ने ले लिया है। पहले बैंकों और सरकारी दफ्तरों में मोटी–मोटी फाइलें रखी होती थीं। अब कंप्यूटर पर बैठा एक कर्मचारी सैकड़ों ग्राहकों को निर्बाध सेवा प्रदान करता है। कुल मिलाकर देखें तो यह परिवर्तन बड़े हद तक कारगर सिद्ध हुआ है। संक्षिप्त रूप से सूचना–प्रौद्योगिकी के इसी विकास को 'संचार क्रांति' कहा जाता है।

संचार के माध्यमों द्वारा हिन्दी का कार्यान्वयन:

सरकार ने भी सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते महत्व को देखते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में इसके उपयोग को प्राथमिकता दी है और जनहित के अधिकांश कार्यों को इन माध्यमों से हिन्दी में उपलब्ध कराया है:

भारत सरकार ने राजभाषा हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने के लिए संचार के साधनों यथा–कंप्यूटर, मोबाइल उपकरणों आदि का सहारा लिया है जैसे–सभी कंप्यूटर को अनिवार्य रूप से द्विभाषी करना, केंद्र सरकार के विभिन्न वेबसाइट का द्विभाषीकरण, आदि। इसके अतिरिक्त, ई–मेल के माध्यम से पत्राचार, रेलवे स्टेशनों में ट्रेनों की आवाजाही की घोषणा द्विभाषी या त्रिभाषी करना, यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश के किसी भी रेलवे स्टेशन में देखा जा सकता है। बैंक में जनसामान्य के लिए दी जाने वाली सेवाओं को द्विभाषी प्रदान करना, आदि संचार के माध्यम से हिन्दी के प्रचार की बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

राजभाषा विभाग द्वारा आरंभ किए गए हिन्दी लर्निंग ऐप लीला (लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेस थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स) ने प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठ्यक्रम को जनमानस तक पहुंचाया है, देखा जाए तो यह एक अत्यंत आवश्यक पहल है जो गैर–हिन्दी भाषी को किसी स्कूल, कॉलेज या अन्य शिक्षण संस्थान में प्रवेश लिए बिना ही हिंदी के आधारभूत ज्ञान से परिचित कराती है। इसके अतिरिक्त, विभाग का वेबसाइट भी हिन्दी के लिए समर्पित है और अपने पत्रों, ज्ञापनों, दिशानिर्देशों आदि को सरकार के अन्य विभागों, बैंकों और उपक्रमों के अनुपालनार्थ एवं सूचनार्थ सीधे ही वेबसाइट में अपलोड किया जाता है जिससे कि सूचना का प्रसार अधिक तीव्रता से और सुगम रूप से हो सके।

राजभाषा विभाग, वित्तीय सेवाएँ विभाग आदि द्वारा राजभाषा संबंधी सभी पत्राचार बहुधा ई–मेल के माध्यम से ही किया जाता है। विभाग द्वारा विविध संस्थाओं में राजभाषा की प्रगति को देखने के लिए 8 क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय हैं जो पूरे भारत में सरकारी कार्यालयों, सरकार के उपक्रमों, बैंकों आदि में राजभाषा के कार्यान्वयन की समीक्षा करते हैं। प्रगति रिपोर्ट को ऑनलाइन मंगाया जाता है और इसकी समीक्षा भी ऑनलाइन ही की जाती है। इसके अलावा, प्रतिष्ठित 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के लिए भी प्रविष्टियां ऑनलाइन माध्यम से ही प्राप्त की जाती है। पूरे देश के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों से रिपोर्ट ऑनलाइन प्राप्त करना और उनकी समीक्षा करना सूचना प्रोद्योगिकी के उत्तम प्रयोग का अनूठा उदाहरण है।

उन राज्यों में जहां हिन्दी राजभाषा के रूप में आसीन है जैसे छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा आदि में राज्य सरकार जनता को लगभग सारी सुविधाएं हिन्दी माध्यम से ही उपलब्ध करवाती है, वह चाहे जन्म प्रमाण–पत्र हो या भूमि के लिए पंजीकरण हो। सरकार के निदेशों के अनुपालन और ग्राहक पहुँच बढ़ाने के लिए बैंक भी जन सामान्य को हिंदी माध्यम में पासबुक, मोबाइल बैंकिंग और इंटरनेट बैंकिंग जैसी सेवाएँ उपलब्ध करवा रही हैं।

इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया के ऐप ने भी हिंदी भाषा का लोहा माना है और ऐप को हिंदी समर्थित बनाकर हिंदी भाषा को समुचित सम्मान दिया। विश्व की प्रख्यात सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट हो या फिर लोकप्रिय सर्च इंजन गूगल अथवा ई–कॉमर्स कंपनी अमेज़ॉन हो, इन सब ने भी अपने कारोबार के विकास के लिए हिंदी को अपनाया है। हिंदी केवल भारत में ही नहीं बल्कि मॉरीशस, सुरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो आदि जैसे देशों में भी बोली जाती है।

उपसंहार :

महात्मा गांधी ने कहा था कि 'राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश के शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है'। भारत वर्ष भौगोलिक दृष्टि से विशाल और आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है, वहीं सांस्कृतिक दृष्टि से वैविध्य भी। कहते हैं परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इस परिवर्तन के साथ बदलना वक्त की मांग भी है। कोई भी भाषा सरल या कठिन नहीं होती वह तो बस भाषा होती है हमारे विचारों, मनोभावों की वाहिनी, प्रेम, दया करुणा सबका संचार करने वाली।

वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए सरकार भी संचार के साधनों का समुचित प्रयोग करते हुए राजभाषा के प्रचार–प्रसार को आगे बढ़ा रही है। देश के विकास की ओर अग्रसर करने की आदर्श भावना के साथ जनसाधारण के प्रत्येक वर्ग को बुनियादी सुविधाएँ उनकी भाषा में देना अनिवार्य है ताकि योजना का लाभ वांछित जन समुदाय तक समुचित रूप से पहुंच सके और यह केवल संचार के साधनों का उपयोग करके ही संभव है। सुदूर दक्षिण में भी पाया गया है कि टेलीविजन, हिंदी फिल्मों और हिंदी पुस्तकों का व्यापक प्रभाव पड़ रहा है और हिंदी के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ती जा रही है। इसके अलावा दक्षिण के फिल्म जगत ने भी हिंदी का प्रभाव माना है और तमिल, कन्नड़, मलयालम, तेलुगू आदि फिल्मों का भी हिंदी संस्करण सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जा रहा है।

अंततः हम कह सकते हैं कि आपसी समन्वय से ही समाज और देश का विकास संभव है जिसमें संचार के साधनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लक्ष्य को पूर्णरूपेण तभी साधा जा सकता है जब संचार के साधनों का बखूबी इस्तेमाल किया जाए। राजभाषा विभाग इसमें बहुत हद तक कामयाब भी हुआ है, पर मील के पत्थर को पार करना अभी भी बाकी है। माना कि यह कठिन है पर असंभव नहीं है। यह आशा है कि संचार क्रांति के सहारे समय के साथ लहरों की तरह अपना किनारा अवश्य ही प्राप्त करेगा।

लीला हिंदी प्रवाह

दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु की गई अनुशंसाओं पर अमल करते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिंदी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के साथ–साथ जनसाधारण को हिंदी भाषा का उच्चतर ज्ञान कराने के लिए 'हिंदी प्रवाह' नामक एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। 'लीला हिंदी प्रवाह' से विश्व के प्रत्येक भाग के और प्रत्येक वर्ग के लोग लाभान्वित होंगे। 'हिंदी प्रवाह' में अलग–अलग विधाओं के कुल 20 पाठ संकलित किए गए हैं। प्रत्येक वर्ग के पाठक की रुचि के अनुरूप पाठों को 'हिंदी प्रवाह' में स्थान दिया गया है।

'हिंदी प्रवाह' का भाव पक्ष जितना सबल है, तकनीकी पक्ष भी उतना ही मज़बूत है। इस पाठ्यक्रम को भी 'लीला पैकेज' प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की भाँति अंग्रेज़ी के अलावा 14 भारतीय भाषाओं क्रमश: असमिया, बोडो, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल एवं तेलुगू के माध्यम से जनसाधारण तक ऑनलाइन वेबवर्जन एवं मोबाइल एप्प के रूप में उपलब्ध कराया गया है।

'लीला हिंदी प्रवाह' के वेबवर्जन एवं मोबाइल एप्प के लिए तैयार किए गए सभी पाठों को 'पाठ एवं शब्दावली' नामक दो भागों में विभाजित किया गया है। पाठ भाग में ऑडियो–वीडियो सुविधा के साथ–साथ चयनित भाषा में अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है। शब्दावली भाग में पाठ के सभी शब्दों के अर्थ यूज़र द्वारा चयनित भाषा में भी दिए गए हैं।

'लीला हिंदी प्रवाह' के वेबवर्जन एवं मोबाइल एप्प में पाठों से संबंधित शब्दों को समझने एवं समझाने के लिए बृहत शब्दावली की व्यवस्था भी की गई है। इस बृहत शब्दावली में पाठों में सम्मिलित शब्दों के अर्थ यूज़र द्वारा चयनित भाषा में वर्णक्रमानुसार दिए गए हैं। इस भाग की विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के उच्चारण के साथ–साथ रिकॉर्ड एवं कम्पेयर सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई है। यूज़र, पाठ में आए शब्दों का अर्थ अपनी भाषा में देखने एवं जानने के अलावा हिंदी में उसका उच्चारण सुनने के बाद स्वयं उस शब्द को बोलकर रिकॉर्ड कर सकते हैं और फिर मूल शब्द एवं स्वयं द्वारा रिकॉर्ड किए हुए शब्द को एक के बाद एक सुनकर उच्चारण संबंधी अपनी कमियों को दूर कर सकते हैं। यूज़र, अपनी सुविधा के अनुसार जब चाहे, जितना चाहे और जितनी बार चाहे, इस पाठ्यक्रम को पढ़ सकते हैं।

अंत में यह कहना उचित होगा कि 'हिंदी प्रवाह' राजभाषा विभाग की ओर से 'गागर में सागर' भरने का एक प्रयास है।

साभार : www.hindietools.com

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 22.01.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम के राजभाषाई निरीक्षण के दौरान माननीय सांसदों के साथ विचार-विमर्श करते हुए हमारे बैंक के कार्यपालक एवं अधिकारीगण ।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 22.01.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम के राजभाषाई निरीक्षण के दौरान माननीय सांसदों के साथ हमारे बैंक के कार्यपालक एवं अधिकारीगण ।

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

स्वर्णिम प्रतिलाभ पाएँ

केनरा यूनीक

1111 दिन की जमा योजना

उच्चतर प्रतिलाभ के लिए दीर्घकालिक निवेश

- अतिरिक्त ब्याज दर: 0.10%* • परिपक्वता या त्रैमासिक पर देय ब्याज
- जमा: ₹25,000/- से ₹2 करोड़ से कम

*शर्तें लागू

@canarabank YouTube CanaraBankOfficial canarabank canarabankinsta canarabankofficial LinkedIn canarabank

कॉल केनरा: 1800 425 0018